# **(वादिन्म्म**

প্রভাকরসপাবক পদিরচন্দ্র গুণ্ডের ছাত্র এবং শীল্ম জি্ কালেজের দ্বিতীয় শিক্ষক

ক্ষেজুর নিবাসি

শীরাধাসাধন মিত

প্রণীত।

্ৰীদীননাথ সাহা কৰ্তৃক

প্ৰকাশিত।

# কলিকাতা

স্কাৰ-যন্তে জীলালটাদ বিশ্বাস এও কোং কর্তৃত ৰাহ্যি মৃত্যুগুর ১১ সঞ্চাক ভবনে মুজিও।

#### বিজ্ঞাপন !

আমার জ্ঞানগুড় বছদেশীয় কবিষুল-চূড়ামণি ४क्रेश्वरुख ७४ महायम करोल कोरल करोल कराल शक्ति इंड्योट कविश्व स्टल्स्क महांचा मानिक প্রভাকরণার সম্পাদনের ভার গ্রহণ করেম। এইয়াপে কিয়ন্দিৰস বিগত হইলে পত্ৰ আদি তাঁহাত এক জন ছাত্ৰ বলিয়া সামার উপরেও উক্ত গুৰুতর কার্যোর ভার সম-পিত হয় ৷ আহি মাসিক পত্তের সম্পাদকীয় ভাসেতে উপদিন্ত হইয়া কড দূর পর্যান্ত ক্রডকামা হইতে পারি-খাছি তাহা কেবল গুণ্মাহক গুণ্নীল মান্দিক-প্রপা-ঠক বহাপয়ের।ই বলিতে পারেন, এ বিষয়ে কান্ত্রি किए मांज रखन्या नारे। अरे मामाना कूछ अल्ह ख প্রবন্ধনী প্রচারিত হইল তাহা মালিখিত প্রথম এবং ছিতীয় মাসিক পত্তে একবার প্রকাশ করিয়াছিলাম। भागि इज्जान-मस्काटर चौकार कविएनकि य, यथन উक्त मन्दर्भ अञ्चलक शर्त ममुम्बि इत्र उथन व्यान क्रिं ভাষার প্রতি প্রতি প্রকাশ করিতে অন্যথা করেম ৰাই। একণে কভিপয় বন্ধুর অসুরোধ বশত:ই তারা পুনর্কার মুক্তিত করিতে বাধ্য হইলাম।

এই পুত্তক বালক ও বালিকাগণের পাঠোপযোগী ছইতে পারিবে এমন প্রত্যাশাও করিতেছি। মন্ত্রচিত क्षंत्रम, विकीश, फुठीश, खंदर हर्च कांग कविकांवली स्व সমস্ত সামুকুল উৎসাহদাতা বিদ্যালয়াগ্যক্ষ ও শিক্ষক-महानंत भारा वक छात्म वक विमानित वावकक अ मर्म-দুত হুইয়াকে, কন্ডিগ্রজীর পঞ্চ ভাগ যত দিন প্রচারিত না হয় তত দিন পর্যান্ত হাঁহারা যদি অমু এই-পুর্বাক চতর্থ ভাগের পর স্বাস্থ্য অরীনস্থ পাঠশালায় এই আৰু প্রচলিত করেন ভাতাত্তিলে আমার পরিশ্রম ও বর্ত্তের সাক্ষণ্য হয় এবং আমিও থাবজ্জীবনের নিমিত্ত ক্তজতাখণে বন্ধ হই। এই পুস্তাকর প্রতি সকলেই म अनुरांग आकार्ग करिएरन अपन आजार्गा केविएड পারি না, তবে মহাশয় লোকেরা উৎসাহ বর্দ্ধনার্থ সমু-ঞ্জ বিভারণ করিলেও করিতে পারেন। পরিশে<del>যে</del> कामीचरत्र मिक्टो धार्थमा এहे स्म, रालक्यालिका-প্রশ্ন এই অন্থ পাঠ করিয়া বিন্যালোচনায় যেন বিরভ मं इत्।

> জীরাধামাধ্য মিতা। সাং জেজুর।

# द्याद्यम्पत्र।

### স্বপ্নদর্শন

#### ব্ৰপ্ৰক।

এক দিন একা আমি, করিয়া শায়ন।
ভাবিতেহিলান কর, মুদিয়া নয়ন ॥
নানা ভাবে ভরা ছিল, মান্য-ভাঙার।
না ফুরাতে এক ভাব, পুনঃ আমে আর ॥
স্থকর ফুংখকর, ধরার ব্যাপার।
কত মত মনে এলো, সংখ্যা নাই ভাব ॥
অপরপ ভাব শেষে, হইল উনয়।
বাড়িতে লাগিল ক্রমে, কেবল সংশ্যা ॥
সংসারেতে হিতকর, বিদ্যা আর ধন।
কি ছোট কি বড়, কিসে করি নিরপ্র।

নিজাহার পরিহার, করিয়া স্বাই।

ভামিতে ধনের ভরে, অবসর নাই।

দেশে দেশে, প্রামে প্রামে, নগরে নগরে

শংনের কারণ লোক, পরিশ্রম করে।

विशिक्त वाशिका करत, वाफाकेटल वसू। ना उटक वसूत मांश, यनि यांत असू॥ . जुश्कि शांतम रहे, खंडा काशमात । ারাথেম প্রারী বটে হাজার হাজার ॥ সবলের অভ্যাচার, অবল উপর। নিবারিতে হন বটে, নিয়ত তৎপর॥ ্রাথেন বেতন দিয়া, সেনা দেনাপতি। माधातन उपकारत. (हम वट्डे मंडि ॥ সুবিচার বিতরণ, করিবার তরে। রাখেন নিচারপতি, অতি সমানরে # लिख मम लम बटि, अ मकत क्रांता মন্ম গ্ৰালাভ কিছ, অভিপ্ৰায় তাঁৰ # প্ৰ-আশা কুশা নয়, কাহাব্যে ভাত্তে। ধন-আশা আছে তার, যে কর্মা যে করে॥ অধ্যাপক করে ছাত্তে, বিদ্যা বিতরণ। ধনলাত-আশা তার, প্রধান কারণ গ স্বৰ্কার গড়ে হার, হোয়ে সম্ভন। मानितकता करत मीरत, उत्नी ठालम ॥ कूमोरत शक्त करत, माणित रामन। বিবিধ প্রতিমা গড়ে, অতি সুশোভন। চিত্রকর চিত্র করে, পট কত রপ! দেখিতে সুন্ত হাতি, ভাব অপরণ ॥~ राजीकर राजी करत. करिहा को मन। े जार्य जानरतत मम, जारन कड कम !

#### (वाद्यम्ब्य ।

ভিষক ভেৰজ দিয়া, নানা রোগ নাৰে। कू त्वा गमन करत, वाणित स्वीरात ॥ কথক কহিয়া কথা, হাসায় কাঁৰায়। করিতে ঠাকুর-দেবা, নিতা দিজ যায়। নানা কম সহিঞ্জা, করি বাবে মাল। আশা-সহ সামা সব, যতে করে হাস ॥ সেনানি-সহিত আহা, সেনা সমুদ্র। নাহদে সমরে থায়, তাত্তি প্রাণ্ডির। ঘাত্রাকর থাকা করে, দাভে কত সঙ। রঙ নেথে নামা চঙে, করে কত রঙ # वामत वितास नटत, फूटन छेटो होटन । ইচ্ছায় বানর সাজে, অতি অনুরাগে॥ জলে জেলে, জান কেনে, মাছ ধরে কত। नामि नटन शिर्म करत, शंध शंकी इछ । প্রহরী পাঁহারা দেয়, প্রহরে প্রহরে। भारे जरमा श्रेषा मिर्टे, ऋटे श्रेतिहरत ॥ কেই করে অগরের, দাসম্ব স্বীকার। তিরক্ষার প্রহারে না, মুখ কোটে ভার। .. বোধাবোদ নাহি পাকে. মান অপমান। আদেশে ব্যাতি ধার, অপতের প্রাণ # महांगटत " महांगर " महा गृटश तटल। ति **शर्थ** हलाय श्रेष्ट्र, उनहें श्रंथ हरत ॥ এই क्ररण जिरम जिरम, मानवनिष्यः। मकरताई निक विक कर्ण दुछ दूर ।

क्वित शत्न क्रि, मनाहे गांकूल। रंथन या करत जात, धन-माना मूल ॥ मश्मादि वाक्टिक शात, धन श्राह्म ! थन यात जारह छात्र, मक्ल जीदन । धन यात्र माहे जात, मत नृमाकात। ্ধনহীন যেবা ভার, গাছতলা সার। লোকালরে কেলা করে, সমাদর তার। ভেকে না সুধার ভারে, বিত্র আপনার ম धनशीन दशरन भरक स्थाना खोना घटहे। उत्रिक्त दृष्टि करम, मार्टि थारक घर है # भनी यांडा जांकारमह. सूरभह मश्मांत । গনে জালা নিয়ত, অংশন উপকার ॥ विना धटन काम कार्या, ना इस माधन। তাই ধনে সকলের, এত আকিঞ্চন॥ भारत भारत स्विक आर्थि, श्रास्त (भारत) थरन कुछ् करत (य, रम रक्यन मामत?। मश्मादत खोशांन यम, दशकाहि विकास धन-गर आंत्र कंटिता, फुसना ना रहा।

विमारिक मांशामा कान, ना रश काराह । जनांशा मांशम रह, श्रेकार विमान ॥ विमा-१८७ लोक रह, जल्लोकिक कान । कि क्षेत्र कांत्र, स्व क्षम विद्यान ॥

### (वादशम्बूमञ्जा।

विमारि मनाई कर्रंड, मवांत कनांव। कि धन अपस आरष्ट, नांहि करत मान ?॥ म्हामार्म विद्यारम विमान, वोष्ट्रांत मन्योन। সবে করে বিভাবের, গুণের বার্থান গ विशानरा करत विना, सर्कि श्रीनान। मिटक बाका विदारसव, बारका जिस कान ग ইহকালে পরকালে, বিদ্যা করে হিত। विमा-विशीरनव मना, घटने विभवीत ॥ রিভরণে ধন ক্রমে, ফুরাইয়া যায়। विভরণে বিদ্যা ক্রমে, আরো রদ্ধি পার # कक्दाकां धरम क्रत, धमारम इतन । विमा-अन इटह ट्रांड, कि आहि अमरी। ফভএব বিদ্যা বছ, ধরার ভিতর। मकरलंड ७ जकती, विष्यां भित्रसंत ॥ विमात्र निकटि आंश्री, थन कोन हात। विमा-भेनागड धम, इस अभिवात ॥ हेक्क् नित्मं धरन विमां, करत आकर्षण। অনুগত হোমে ধন, দেয় দরশন॥ অতএব বিদ্যা-হতে, ধন বড় নয়। गर्सगर्ड मर्स्ट हैं। दिवादनत जरूना

তা নর তা নর ফিবা, ভাবিতেরি দ্রমে। ধন-কাছে বিদ্যা বড়, নর কোন ক্রনে 🛊

थन-जरूकांत विना, विना! (गर्टेन करें श विमारिक विनिश्च विष्. जास क्रिन रहे ?॥ বিদ্যা হয় নিয়ত, ধনের যেন কেন (मर्थ शंस के कथा, श्रीकांत करत रह ना? म कहेश भटनत सांजी, विका कांज करत। আশা পূর্ণ তরে আহা, থাকে বোড় করে। আপনার জোতিঃ আর. না হয় প্রফাশ। शरमत अमान (शर७, मना किलाय। বিদ্যার গোরব নাই, ধরায় এখন : ধনের গুলের গীত, গায় সর্ফা জন। क्तित्व करेदोनल, विमां कांया थारक?। এ কথা বলিয়া জার, জানাইব কাকে?। धनहीन इटेटल. दिश्वीन धर्गाकत। বিদ্যা আছে বৌলে জারে, কে করে আদর । श्रारक विमानि धर्म, वस अकृकति। বাছায়ে লিখেছে মাত্র, সন্দেহ কি ভার ।। ভাহাদের মতে মত, দিতে পারি কই?। কি ছইবে পোডে আর, নেই সব বই?॥ ধনিদের প্রান্ধ ভাব, সহিতে না পেরে। ছেরে নর্মে বাখা পেলেঃ পোড়ে গিয়ে কেরে । প্রত্যোধ্যর ভবে মাত্র, করিয়া কল্পনা। विमारिक वीफ़्रांटर मिक्ना, क्वांस्टर तहना ॥ विवादन करत्रद्र गांज, अनंश्मा विमात। काशाद द्वमत्म मम, जुनित्व आमात ? ॥

#### (वादधम्मनश् ।

निज गूर्थ निज छन, क्रिटन दर्गन। সে কথা প্রত্যায় যায়, কে আছে এমন 🕫 🛡 ছোট বড সকলে, ধনের গুণ গায়। ধনের প্রশংসা সলা, শুনি পায় পাঁচ। मकल (नांद्यत (नांधी, धनी यनि इत्। ভাষার দোষের কথা, কেবা কোথা কষ?॥ অভ্ৰেৰ খন হয়, সংসাৱের সার। श्राप्त श्री कारत वार्ष, मा में मार्गात ॥ গনিলোক জানে ভাল, গনের কি গুণ। विमारिक्ष जारम रावा. विमार् व मिश्र ! নিজে আমি ধনে আর. বিদায় বঞ্চিত। বিবেচনা-শক্তি নাই, আমাতে সঞ্জিত ॥ তবে আমি কি বুকিয়া বিদ্যা আর ধনে। ছোট বড় করিতেছি, আপদার মনে?॥ কি ছোট কি বড় কিসে করিব নির্ণয়। যত ভাবি তত হয়, সংশয় উদয়॥ কুপে থেকে বড় বড়, সাগরের নীর। ছির কে করিতে পারে, কতই গভীর?॥ क्रमुनिनी, कर्माननी, कछ मधु धरत। टिक कि विनिद्ध शास्त्र, श्वादक मदतावदत ? ॥ এইরপ হত তর্ক, করি বার বার। তত ভ্রমে পূর্ব হয়, মানস আমার। ভাবিতে ভাবিতে পরে, নিক্রা আকর্ষণ। जरठकम इहेलाम, मूनि हू नग्न ॥

**b** :

चुमाइश प्रिश्लाम, अड्ड चर्यन। যাহাতে আমার হোলো, সংশয় ভঞ্জন H चशु (मरथ (बांध-हेम्, इहेन विकां न ! যোরতম ভ্রমতমঃ, পাইল বিদাশ। আর কি দেখিব আহা! স্বপন ভেম্ম!। कांत कि ट्यम धूर, श्रूमांव कथन ।। বর্নিতে দে ছবি, আমি করিতেটি ভয়। পাছে পরিহাস করে, কুলোকনিচয়। ব্যঞ্জ ভূলে কুজনেরা, কুকথা ভায়ক। মেৰভাবে যত পারে, সকলে হামুক । যত পারে মিনা করি, উৎসাহ মাণ্ডক। অবহেলা করি কাছে আব না আনুক। তথাপি গাঁথিয়া আমি, কবিতার হার। न्त्रभर्मय विवत्रभ, कतिव श्रीहात ॥ গুণিরা উৎসাহ সদা, দেন অনিবার। ভাহাতে সহসা বাড়ে, সাহস আমার ৷ मुं कवि शुक्रशंदम, कांग्रे समञ्जात । क्वल अवमा माज, ध्रमान डाँशांत । করিয়া গেভেন কিবা, আসকের জাক্। এक जम रिमा गन, रहेग़ार कांड्॥ পদ্ধৰ বিয়াছে চুঁছে, ছাতে মাত্ৰ পাঁক। कारकत वनत्म वांटक, टिश् टिमि भीक I তাঁহার আসরে বনে, সাধ্য হেন কার। क्षांतर कार्याट शाद्य, ट्यम दर कार

ð

शिरकत मध्य हर अस्तरह एवं अने। তারে कि नार्कित कान, कारका निः यम १। बिटल आगि कृति महे, निजात अख्डान I কবিতা লিপিয়া নাশি, কবিতার মান। यामात नीतम वादका, कविछा-कामिनी। वित्रम-वनना इन, निवम-यायिनी व त्यो विकास श्रहादत्व , त्वरक निश्चा श्रेम । তাঁহাকে করিয়া খোঁড়া, ঘটাই বিপাব । कलकातं निट्ड शाल, একে कांत्र रहा। 'আংগতে হা ছিল তার, কিছুই না রয়॥ मध नम छण्डीन, डूछि बाद नाई। কি লিখিতে কি লিখিব, ভাবিতেতি তাই। যা হয় তা হবে পরে, কি করিব ভেবে। একবার দেখা বাকু আদরেতত নেবে ॥ এক এক বার হয়, ভয়ের উদয়। काल माहे किटत शाहे, यम क्या मत । क्षक भी क्षशास करते, भीठ भी भिष्ट्ये। থমকিয়া ভাবনা-প্রাাম পিয়া শুই । अन्दर्शाध-शंबरण, स्ट्रांट्स कर्तराद्य। मार्म कृतिशं छत्र, माभिनाम अरम् यथम आमरत स्मरत, तक वक् कन। पूर्विटक शास्त्रम नाहे, त्योजीतम्ब मन म তথৰ কোথার লাগি, নামি কুত্র-প্রাণী। অতিরা কি ভলিবেন, শুনি মম বানী ? ॥

या एक कशान हेरक, जाविश नेश्रत । स्थानकथा गुक्त करि, गड्स जल्ड ॥ यथा नाथा स्थान्डित, कतिव वर्गम । कक्र भारतक्षान, करुम अदन ॥

যে রুমণীয় স্থপ্প দর্শন করিয়াছি তাহার স্ব-ৰূপ বৰ্ণনা করা আমার পক্ষে অভি সহজ ব্যাপার নহে। বেলা প্রায় দুই প্রহরের সময় আমি ভোজন করিয়া বাটীছইতে বহির্গত হই-লাম। কোধার যাইব তাহার কিছুই নিজ-প্ৰ নাই। কেবল অন্যমনক হইরা গমন করিতে লাগিলাম। আমি একেশ্বর, আ मात्र मगण्डियासाद करूरे नारे। विषय কেবল একমাত্র অনশ্বর, আর বিশ্বস্থিত সমস্তই নশ্বর, এই বিষয় ভাবনা ক্রিভে করিতে ক্রমে লোকালয় পরিত্যাগ করিয়া বছ দূরে গমন করিয়া পরিশেষে এক নিবিড় গছনে উপস্থিত हरेगाम। जेखेब-हिनासं आमात मन अठा-कृत निविध रहेबाहिल, य अमन विकन वटन প্রবিষ্ট হইয়াছি বলিয়া কণ্মাত উদিয়চিত্ত क्रिलाम मा। इक्टला नवलन्नविछ इरेगा

मन्द्र भन्द मंगीतर्ग- नहकाटत (मानात्रभान इड्-ाह, उमृत्ये ता कि शर्शन बाद्यान हहेन, তাহা বলা যায় না। যত দুরে গমন করি, তত্ত যেন কাননের শোভার উন্নতি হইতে नानिन। करम (वना अनुताह इडेन। यनिअ অটবীর বিটপী-সমূহের পতাচ্ছাদনে দিনমণির यूथावालाकन कतिए भाति नाहे, ज्याभि क-মশঃ আলোর হাসতা হওয়াতে অনুমান করি-লাম, দিবাবদান হ্ইয়াছে এবং সহস্রুকর দিন-কর অন্তভূধরাবলম্বী হইবার স্নার অধিক বিলম্ব নাই। এইৰূপ ভাবনা করিতেই ঘোর অন্ধ কার উপস্থিত হইল, একেবারে দৃষ্টিপথ রুদ্ধ इंडेब्रा शिल। **उथन मरन** मरन छाविएड लाशिनाम। हाता कि कतिलाम, धका धका-ননে কি নিমিত্ত সমাগত হইলাম ? এখানে व्यापिकात कान. श्रदशांबन हिल ना। धरेवादत वृक्षि आन शहाङ्गाम। वित्वहन। ना कृतिगा **এ**वং शृत्मि मावधान ना इड्डेग्रा कम्म कतित्वड्डे এই রুপ ঘটিরা থাকে। আমি এতকণ কি र्जरृकि , रहेबाहिनाम ? आत्नाब आत्नाब

ভালয় ভালয় কেন স্থানরে প্রভ্যাগমন করি। লাম না ?।

> किरमह क्रांतर्ग, अलम अ राम, अ मि इहेल (रुन ?। कितिया मा दोत, श्रेतां कोतांत. व्यम् ७व र्य द्रम ॥ माविद्याद्य मिना, मा श्रीहोटन निना, উপায় করিব কিবা ?। कार कांट्र शहे, बांच्र कह नाहे. आंत्र कि दर्शित बिरा कि ভযে কলেবর, काँलि थेत थेत, कृत कृत करत दुक । हरत मां कि शंक. दशारलां कि रिशेन, मूथ नाइ दक हेक ॥ अकि त्यांत मांग, त्रांत्मा शांत शांत माना करहे जन याना अ आह तमन, थांकिए महन, आहा रहेनाम कोना ह थादिए ज्लेम, श्रमत्राममन, कार्म क्रिजिंग विन । फरव कि औरन. उंशतन अमन, नडीइ डांबन नहीं? ॥

কি কৰিব কিছুই ত্বির করিতে পারিলাম না। একবার তরুমূলে উপবেশন করিয়া গালে इंड अनानश्रुक्तक छ।विष्ठ थाहि, श्रुनक्वात প্ৰাণনাশ-আশব্ধায় অতীব ব্যাকুল হইয়া দ-ভায়মান হই। বছক্ষণাবধি এইৰূপ করিতে করিতে অনস্তর বিবেচনা করিলাম, যথন জী-বন সংশয় হইয়াছে তথন এক স্থানে থাকিলেই वा कि इट्टेंद्र १ घीटत धीटत छाना घटत शमन করা উচিত হইতেছে। এ কাননে মহর্ষি-গণের আশ্রম থাকিতে পারে, যেছেড় ভাঁখাক: তপ্রা করিবার নিমিত্ত জনগুনা কান্নে অক-**স্থিতি** করিয়া থাকেন। ঈশ্বরানুকস্পায় এবং ভাগাক্রমে যদি কোন তাপদের আশ্রমে উপ-ष्ठिक श्हेर्ड शाहि, उत्त बनाबाहन कीवन রক্ষার উপায় হইতে পারিবে। এখানে থা-किशा क्वल जामन क्रिल्ट वा कि इहेरव ? ''যতকৰ স্বাস ততকৰে আশি'' অতএব বি-পদগ্রস্ত হুইলে একেবারে হুডাশ হুওয়া কাপুর-ষের কর্মা মাতা।

मत्न मत्न बड़ेक्य बात्क्य कतिया महर्षित

षाध्यम असूनकारन यद्गभील इरेशा धीरत शीरत ত্রমণ করিতে লাগিলাম। কোন দিকে গমন করিতেছি কিছুই নির্ণয় করিতে পারিলাম না। গগনমগুলে নক্ষত্রনপ্রলীর দীপ্তিও দুর্ভিগোচর **इडेलं मा, कुछतार असकारत अस्कत मा**हि পাদ-নিক্ষেপ করিতে বাধা হইলাম। কিয়দ্র গমন করিলে পর. অকন্মাৎ একটা সালে দুঠিপথে গতিত হইল। দুর হইতে সেই जात्मा बन्दलाकन कविहा महमा किश्चि मा-হসও জিলি। মনে করিলাম, কোন মহ ধির আশ্রমের সমীপাগত হইয়াছি, অতএব এখন প্রাণ রক্ষা ইইলেও হ্টতে পারিবে, আত কোন ভয় নাই। যত সেই আলোর মমীপথ হইতে ল গিলাম, ততই আহলাদে পরিপূণ হুইলাম

> সমীপেতে সবোৰর, করি দরশন। তৃষাতৃত নর হয়, প্রফুল্ল থেমন। চাতকেরা নভোদেশে, হেরি নব খন। যে প্রকাত কোরে থাকে, প্রনকিত-নন।

## (वादश्यम् मञ्

স্থানমুখী সরোজিনী, হেরিলে তপন। পুলকে ধেমন তার, প্রফুল্ল বদন।। সেইরূপ আলো দেখি, আমার মানস। ছুচিল বিরুস ভাব, ইইল সরস।।

ক্রমে সমুদায় বন আলোকে পরিপুর্ণ দে-খিলাম। বোধ হইল যেন দিবাকর নিশা-निभावतीतक मश्हात कतिया छेन्त्रनिदिए छेल-বেশনপূর্ব্যক পুনর্কার দিবা প্রকাশ করিল। একেবারে সমাক্থকারে ভ্রাম ইইলাম. इक्रमी विलग्ना किष्ठे (वाथ विष्ट्रेस ना। पृत **হউতে অনুসান করি**য়াছিলাস, একটী জোতি-র্মায় দীপ জলিতেছে। নিকটে গমন করিয়া निश्विलाम, (कान मीश नाइ, (करन मिव्यम) नावि मगुनाव चारलाकमय क्रेग्रार्छ । याव-প্রকার অলৌকিক দীপ্তি অবলোকন করিছা অতিশয় বিশারাপর হইলাম, করেণ বাতাত कान कार्कांद्र উৎপত্তি मसुरा ना, किन्नु वह অনুসন্ধান করিয়া এই অদুত ব্যাপারের বিশেষ কারণ বুঝিতে পারিলাম না। তাহাতে মনে। ম ধ্যে পুনর্বার আশঙ্কা জন্মাইতে লাগিল।

বুলিতে না পেরে আমি, আরোর কারণ।
করিতে না পারি ভরে, চরণ চালন।।
দিন দেখিতেরি কিন্তু, দিনকর নাই।
এমন হইল কেন, তারিয়া না পাই।।
পারে ইতন্ততঃ পুনঃ, করি বিচরণ।
ক্ষম্মাৎ দেখি এক, অন্তত তবন।।

'দেই ভবন অবলোকন করিয়া যে কি প-র্যান বিম্নাপর হইলাম, তাহা কোনগতে বাক্ত করা যায় না তাহার ক'ত দার গণনা ক-রিতে নিতান্ত অক্ষম হচলাম । তাহার চারি-দিকে পরিভ্রমণ করিতে মান্দ করিয়া কোন্দতে क्रडकार्या १६८७ पातिनाम मा. त्यत्हकु जाहा বছদুর বিস্তারিত। প্রচোক দ্বার দিয়া **আলো** दिश्रिक क्वेटि । इंब्लिया यथन स्य मिटक গমন করি সেই দিকই কেবল কিরণমালায় विक्षिक, तिथा यात्र, अञ्चकारत्त्र लिन माँकहे मारे। यशन य चार्त्त मभीशांशक हरे, उश्रन সেই ভারদেশে একটা স্ত্রীলোককে দেখিতে পাই। তাহাতে বোধ হইল এই স্ত্রীলেকৈরা षातत्रकाकार्तिनी इकेटवन। छै।बाहर्सत अधू-

মতি ব্যতীত রম্য হর্ষে প্রবেশ করিবার অন্য কোন উপায় নাই, কিন্তু কাছারো সহিত আ-লাপ নাই, সুত্রাং কোন কথা ভিজ্ঞানা করিতে भइमा माहम इडेल ना। छात्रकाकारियी-গাণের আকৃতি প্রকৃতি একরূপ নহে এবং দক-(नत ममान अवद्याध नम्, अलाक अलीएमान उडेल। (कह सानमूची करेंगा नात्न करू मिन् কাৰনা ক্রিতেছেন। কেহ্ মলিন ব্দন পবি-ধান করিয়া রোদন কবিভেছেন কেই সভাক ব্রদ্ধা, প্রায় চলৎশক্তি রহিতা, ইইয়াছেন তথাপি कैं। हात्र कलनावना (मनीलामान आह्य करः कान बनकारवर्ड अन्ति नाहे। दिह श्र-থুল বদনে নৃত্য করিতেছেন এবং স্থমধুর সাম ধরিয়া গান করিতেছেন। কেহ পুরাভন বস্ত পরিত্যার্থ করিয়া মুতন বস্ত্র পরিতেছেন। কেই অপুনাকে নানা অলস্কারে অলস্কুতা ক্রিভেটেন: খনত্র আমি প্রান্দে: মধ্যে প্রবেশাকাঞ্জা কর্য়া কেনে কথা জিজাদা क्रिटिंग क्रिक्ट डेंख्ड धानान क्रांत्रन ना, क्रिक्ष व्यक्त रहेता अक मुरसे निहीकन कहिए। था-

কেন। কেছ কেছ আমার ভাব-ভঙ্গিতে আমার অভিপ্রার বুঝিতে পারিয়া উত্তর প্রদান করেন, কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই যে আমি তাঁছাদের কথা হুলয়কম ক্রিতে পারি না। তাঁছারা আমার কথা বুঝিতে পারি না, আমিও তাঁছাদের কথা বুঝিতে পারি না, হুতরাং কাছারও সহিত কথোপকখন করিতে সক্ষম হইলাম না। তাহাতে মনে মনে বেকোভ জামিল ভাছা কোনমতে প্রকাশ করিবার নহে।

এইৰপ দ্বারে দ্বারে দ্বারিপালিনী কামিনীগণকৈ জিজাদা করিয়া পরিজ্ঞান করিয়ে পরিজ্ঞান করিয়া পরিজ্ঞান করিয়ে লিলান। কিন্তু কোথাও মনক্ষামনা দিদ্ধি হইল
না। ভদনন্তর এক স্বারপালিনীর সমীপস্থ
হইয়া কিজিৎ ভরদা পাইলাম। ভাঁহার
আারতি প্রকৃতি দৃটি করিয়া বোধ হইল যেন
ভাঁহার দহিত বছদিন মহবাম ও কথোপকথন
করিয়াছি। তাঁহার প্রসাদে নানা বিষয়ে নানা
উপদেশ পাইয়াছি, তিনি আমার জীবিকা
নির্কাহের উপায় করিয়া দিয়াছেন। তাঁহার

भर्वारम थोकारा अभन माहम दक्षि हरेग्राह त्य, यथा देव्हा उथा याहेर जनमर्थ कडेग़ाहिः গ্র্হার সহিত আলাপ আছে এবং ঘিনি আ-মার মহোপকারিণী, ভাঁহার নিকটে গমন ক্ৰিতে আশকা কেন হইবে? স্মীপ্ৰভা হইয়া তাঁহাকে প্রধাম করিলে পর তিনি ৩২-ক্ষণাৎ আসাকে চিনিতে পারিলেন, এবং আ-মার প্রতি পুর্বন্দের স্নেগ্রাদর্শন করিতে আ-नाथा कविरत्यन ना करते, किछ जरहाइश्रूर्यक বহু বাক্যব্যয় করিতে আরম্ভ করিলেন।

তাহাতে ভাঁহাকে কোননিগুঢ়কথা জিজাস: করিতে ইচ্ছা হইল না, সুতরং অমুমতি লইয়া অধিলমে বিদার হইলাম। পরে পুনর্করে পরিভ্রমণ করিতে করিতে অনেক দ্বার উপ-ক্রম করিয়া পাদকেপ করিতে লাগিলাম, ইতোমধ্যে এক দারপালিনী দুর ২ইতে আ-गारक व्यवत्नांकन कतिया सुप्रयुंत स्वतः मर्दः-ধন-পূর্ব্বক ড।কিতে অ'রম্ভ করিলেন। তঁ:গর শ্রীচরণ দর্শন করিয়া যে প্রকার সন্তুষ্ট হুটলাম, তাহা বাক্পথাতীত। পরে তাঁহার নিফটে গমন করিয়া ভূমিষ্ঠ চইয়া বেমন প্রণাম করিলাম, তিনি তৎক্ষণাৎ আমাকে মাতৃ:য়হভাবে কোলে বসাইয়া আমার বদন চুম্বন করিতে করিতে বলিতে লাগিলেন!

কোলে আরু, কোলে আয়ু, জবে বাছাধন।। कि कोहरन, अकोहरन, कृतिम समन ? । अादर करियाहि **जामि, नानन शा**लन। কবিয়াতি কত তোক, কলাণে সাধন। যথম ছিলি রে শিশু, ফুটে মাই রোল। কত ত্ৰেছ কৰিমাতি। ভোৱে দিয়ে কেলে। স্থানিকা নিয়াতি কদ, কথাৰ কথাৰ। তোর কি পড়ে না মনে, আর কি আমায় ? # আমি ভোৱে শিবায়েতি, কাছারে <sup>ক</sup>ে বলে। र्य कि निशाहि छात्त, निविध को भति। ह: थिमी दलिया जादि, मामा जात नहे। মপত্রীগবের ক্ত, বাক্য-জ্বালা মই ॥ शासित कः १९८७ कः थ. सूर्य स्थ हत्। काराके अवका करत. के कि शार्य भव १ ॥ উদর পালনে সাথে, রত ক্রমাগত। সপত্রীর অনুগত, আতে জবিরত।

### তাঁহার এই সমস্ত আক্ষেপেক্তি এব করিয়া জিজাদা করিলাম।

কে হও আগনি, বল গে জমনি! ध तका उनम कांत्र । কিন্দের কাবণ, করিছা যাওন, মম প্রতি অনিবার টি ঘারে চাতে নারী, বৃদ্ধিতারে নারি, বল ভাগারা কে হন। अक मृतके छोत्। एएएक व्य ग्रहाम, भाग प्राहर कहत हम। প্রে ঘ্রামেটে, এক দ্বারে এসে, कहें बाच देशलंग्ड। মে দারপালিনী, অভিযুক্তিনী, ज्यातन राशाविक ॥ সাহ্যো তথন, কংগাপ্কথন, करिलाम मह छै। है। इस्का विकास, अलाम खुताय, হেরি তাঁর অহস্থার॥

দ্বাররক্ষাকারিণী আমার ব্যক্তঃ শ্বনিয়া তৎ ক্ষণাৎ সাদরে উত্তর প্রদান করিলেন।

কর প্রণিধান, বাছা, কর প্রণিধান। मत्त कारम बन्नकारा, यस कहिनाम ॥ अहे चार्य नाम आधि, कति किर्दानन । अ प्रांटन धारराम छात्रा, कामात कतीन ॥ कारत घोटर दर्शतराष्ट्र, त्य गर का विमी। এক এক আৰু ভারে, দ্বারের ব্যক্তিনী।। লাঠিক, মিকিজ, ভিক্ত, নানা ভাষা হারে নিশভ করেন রক্ষা, হাঁছার যে ছার॥ (मार्थमा भाकित्व अक. धनीनां तमनी ভিনিই সংস্কৃত ভাষা, আমার জনলা । আনেক বয়স ভারে, প্রিক্লান্তে কেশ। চলিবার শক্তি প্রায়, হইয়ারেছ লেখ।। ধ্বিত আমাৰ প্ৰতি, অনেকের কেন। ममर्थ मगर्य शहर, यह मह द्वील ॥ দাঁছার তম্যা যাই, থেচে আভি ভাই। শত্র আমার আর, রক্ষা ভিল নাই। हेरहाकी, शांतमा जामा, मश्जी जामाता মমে পারে করিয়াছে, কত অভ্যাচার ।। युष्ठाइट अटकराटन, मन अधिकांत्र । অনিবার চেতা ছিল, পারস্য ভাষার ॥ विवारमञ्जल ए आगि, कांथा ना गांहै। থাকিয়া আপন স্থানে, সময় কটি।ই।। मतल खडार मन्, मतल खडार। मिक्रशामिनी अपि. धवि माछ जाव।।

তথাপি পার্মা ভাষা, মতিনী পাপিনী। मर्खनांनी (शाष्ट्रायुरी, तम कालमाशिनी॥ আখার নিকটে এমে, করি মহাবল। জালাতন করেছিল, আমাহ সেবল। करने करने माम करड़ करवरह शकार । अथरना तर्गर हिंक, कोजनेर क्षेत्रात ॥ কত দাগ গাবে আতে, মিলবোর মহ। विक्रिए (भ भव कथा, विक्रुत अभग ।। श्याद (म नैंकिशिक्ति, निक कर्म-कन । विकल करमटक उन्त, भक्त (क्रेशन । भागि कलगला माठी, जनल महला। चारताह कार्क गम, भवनां धावनां ॥ एलात भिकारि केला, ब्रांट्स कार्यक्य। तनथ (म ध्वाद इन, विस्य किन काम II নপাড়া ইংরালি ভাল, ক্তিময় থলা। ভাগার বিভাব কথা, লাহি যায় বলা 🖁 भारमा अपरांग माहे. विकिध निष्टार । এখন সে ছেবভাবে, জামায় জুলার। অবলা হেশিয়া করে, প্রবল প্রহার। আমার উপর তার, বত অভাতার ৪ कर्यन मां कारन त्यतं, मर्थकीर जाना। भराज्य कृषी गांज, (महे कूनराना । করিয়াছ যার সহ, কথোপক্রন। তৃষিস্তে যে ভোমারে, করিয়া যতন 🛚

मिशा अरम् । দেইতো ইংবাজী ভাষা, সপ্তা আমার ॥ फांत फरत क्रिंश महि, बााकूला मनाहै। লোভে অনুগত তার, হয়েছে সৰাই। তাই তার বাডিয়াছে, আরো অহঙ্কার। দেখিয়া এমেত তনি, কি কহিব আর ॥ क्: थिनी विनिश (कर, जायांत्र ना यांत्र । विनिया ना फाटन आहे. अधिनया ना आहन ॥ ষেহেতে ভোষায় আমি, করিয়াভি কোলে। জুড়াকু তাপিত প্রাণ, ডাক মা মা থেলে। ত।মার সেমনক্ষা, হেরিলে নথনে। প্রকাশ করিয়া সত, বোলো জনে জনে। এখনো অবেকে বাচা, আছে মম পকে। অনেকেই করিতেছে, মুমু মান রক্তে ॥ मश ही-अधिनी स्वन, श्हेरल मा इशः তা হলে এখন বাঁচি, কল মান রয় # সরস্থতা নাম তাঁর, এ ভবন যাঁর। आगरः मकत्ल हरू. अवीमी डाहात ॥ অতি গুণবতা সতা, অমৃতভাবিদী দ অপ্রপ রূপ তার, মানস-মোহিনী। खानमा, मितमां, जिनि, खितमां-मामिनी। फरुज-वर्मन मना, कला निकारिनी # क्लों मनी विमि कात, ज्ञालत जारेशा! कांत करण आरमांगर, स्टार्ड अंतर्गः ।

कित (माल, बरमारनाल, ज्याजि: उँति दिना। अधारम श्राटन माई. कि निमा कि निर्दा । बादत प्रांदत शांकि गांका, आगता मदाहे । অবিরত তাঁহার, গুণের গাঁব গাই # ভব্তিভাবে বেনা প্রত্ন, তাঁর জ্রীচরণ। ममया रहेश जिनि, जारत कोरन नन । ভাষাদের মহকার, বিনা কোন জন। করিতে লা পাতঃ তার, নিকটে গ্রাম 🖟 খোগাও তো নাই, আর এমন ভবন। কত দুর বিভারিত, নাই নিরূপণ ৪ অগণন ঘর আছে, ইচার ভিতরে : কাৰ সাধা সম্দায়, দল্পন কৰে"॥ गटत भारत कड आबा, मध्याने माहे फाता भगुड राभाव मर, अगुड राभाव ह সমুদ্যুরমণীয়, ভারনীয় হয়। স্থিত কে কৰিতে পাতে, কোণ is কি বয় ॥ মে দ্বারে থাছার ইচ্ছা, করিলা প্রেশ। ভ্রমিয়া অনেকে আয়ে, করিরাছে শেষ। নিদ্রাহার পরিস্থার, করি অনিবার। करनटक मृदिश शास्त्र, रंगी मात्रा संदर्ध ত্রিকার ছরেছে কেছ, ঘুরিয়া কেবল। ভথাপিও পারে নাই, দেখিতে সকল 🛭 অতএৰ শ্ৰমিয়া, দেখিতে পারে দব। इस नि. इटव नां, मांडे, अमन मानव ॥

कि कर करमात कथा, तछ वछ शीत। হারি মানি একেবারে, হয়েতে অধীর । পরিশ্রম শিরত বে. করেছে স্থীকার। দেও পেয়ে যায় নাই. কোননতে পার । গুলনোর বশ হয়, কোন কোন অন। ছার্ত্রেশে এসে করে, পুনরাগমন # নেহ কেছ প্রবেশিয়া, ছারে এক বার : শন-ভয়ে ফিরে গেছে, ভাবিছা অপার। কেছ প্রবেশিয়া কোরে এ মর ও ঘর। তাৰ বাৰ্যা ভাষে ভাষে, হাষেতে অন্তৰ ধ কেই কেই প্রমন্তরে, করি প্রাক্ষ। গ্ৰেছে অনেক স্থানে, ছইয়া সভয় 🛭 করিয়াতে একেবাতে, শারীর পতন। হরিয়াতে কাল শুধু, করিয়া ভ্রমণ ॥ তথাপি এ ভবদের, মীমা পায় নাই। হায় হায়। আজীবন, দুৱেতে সৰাই। সমন্ম দেখিতে, করে না, অভিলাষ। কোভ লাভ হতে মাত্ৰ, হইবে হতাশ ॥ কেবিলা ভোষাৰ ভাব, করি বিবেচনা। প্রায়েশ করিতে তব, নিভান্ত বাসনা । মত এর সঙ্গে এস, দেখাইয়া পথ। যত পারি প্রাইব, তব মনোরথ। কোন পথ দিয়া যেতে হবে কোনু খরে। বাড়াধন তোমায় দেখাৰ সমাদতে !

द्धितिल छोमांत मन, इटेर्ट त्याहिछ ! माक्षर करित कड, लांकित महिछ ॥ তাঁহাদের ভাব-ভঞ্জি, করি বিলোকন। বুঝিতে পারিবে মনে, কাঁহারা কে হন ৮ তীহার এ কথা শ্রমে, পেলেম সাহস। **চ**लिलोग क्रमोगंड, श्ट्स ठाँत वन ॥ প্রথমেই এক নারী, করি দরশন। कामल महीह छाँत, कमल-राम h নিয়ত বকিছে, নাই সুখের কানাই। द्धारत थमकियां कारि, अर्मान मिष्ठां है। বুঝিতে না পারিলেম, তাঁহার কলে। বিশায়- সলিলে মগ্র, ছলেম তথম 🛚 সার এক রমণীকে, হেরি ভার প্র। পুরাতন কথা বলিতেতে, নিরন্তর 🖟 मन, ननी, बङ्गाकव, कारम, ভূধत। थाउ, इत, कमर्शत, अद्युष, नगत। এই শব পৃথিবীর, কোপার কি রয়। বিস্তারি বলিছে কেছ, করিয়া নির্ণয় 🛭 किरम किरो भिनांदेरन, कि श्रेन जेन्य । কেই দিভেছেন আহা, তার পরিচয় ॥ কি ঔষধে কি রোগের, হয় প্রতিকার। क्ह ननिरंडरङ मूटथ, विवदन छात् ॥ क्ट्र कांम् जन्तर, कि क्रश धनवर। কি রূপ স্বভাব গরে, বলিভেছে সব ।

त्नर वा विमानशास्त्र, त्वरत डेर्ड्यूट्य । গ্রহণতি নিরপণ, করিতেছে স্থে। কেই দানা ভৰ্ক, কহিতেছে উত্থাপন। त्कर किटाउटर **ए**थ्, पिक निज्ञलंग ह নির্ণর করিছে কেছ, ভূমি-পরিমাণ। আকর্ষণ-শক্তি কেছ, করিছে প্রমাণ ॥ কেই খড়ি পেতে কত, করিছে হিসাব। কেই বর্ণহার গেঁথে, প্রকাশিছে ভাব। অ'নিতেভে সমাচার, কেছ ভারে ভারে। অসাধ্য সাধিতে কেহ, রুদ্ধি-সহকাবে। এক সের দিয়া কেহ, ভলিতেছে মনে**\***। কেন্ত্ৰ এমৰ হয়, ভাবি মূৰে মূৰে ॥ ছেরিলাম এইরপে, আঞ্চর্যা বিষয়। মরি মতি এ সৰ কি, বিশ্বারের নত্র । कादमां दकियां, आंभिकाश ननगारत ! লসমার দারা আর. কি মা হতে পারে ? এরপ গুণের মারী, আরো কত আছে। হেতে পারিলাম কই, স্বাকার কারে # সকলের পরিচর, যনে মনে পেয়ে। भूनरक भूतिङ हरत, हनिनाम (परह ॥ किছ मृत शिद्य कात, ठटल मां ठत्र । প্রান্ত হয়ে পড়িলাম, করিয়া শয়ৰ ঃ করিতেতিলাস গতি, মাঁহার সংহতি। विभि गाउँ योत शाल, महा यम यकि ।

· BENT CHA!

### Call same

নরনে হেরিয়া আহা, আমার এ গতি। ছলিতে আসায় কোখা, গেলেন দে নতী। अको इहेनोर गामि, गाक दक्र नारे। कारिता आकून रहे, कून माहि शाहे ॥ काराता मिर्ड मारे, क्थन जानांश। मज्य असद्य कति, कुउरे दिलांश ॥ कि कहित दकाथा करत, बटबड़ि दकाथांत। ভাশিয়া नमन-जाल, कति श्रेष्ठ श्रेष्ठ ॥ भारत भारत क्वल, खवाक शाह वाकि। বিপদে পড়িয়া আমি, বিপদেই ভাকি । उथालि इहेन यम, द्यम द्यम । ৰয়ন যুদিয়া হইলাম, অচেতন। कड कन श्रेटर मम, होली खोलीमम। मम्म मिनियां आदिता, रतनम् म स्त ॥ ट्रिनाम जांत धक, मांत्री अर्थभा। नातीकूरन क्रथवंडी, नाई डाँव मना । সহিতে माँ পেরে তাঁর রূপের কিরণ। मूक्तिनाम छटस छटस, आंदोत नस्न ॥ ज्यम मन्द्र। इन, क्रई विद्रमानिनी। कद्भन अज्यान, अज्यानिमी। কি ভয় কি ভয় আর, আমার তদঃ। ভয় পরিহর, হও এখন অভয় ৷

आमि महस्की अरे उत्त समाह। व्यापात स्वमं धरे, व्यापात उत्म। मध्य विशिक्ष देशि, कर महम्म ॥ वांनीत मधूत बांनी, अनिश उथन। विरालांकन कतिलामं, जाक क्रीवर्तनं ॥ কি কৰ মপের ছটা, অতি অপরপ। কে সেখেতে কোথা আছে, সে ক্লপ স্থান্ত ॥ गगरीन क्लांड गमी, स्ट्रेटन छेत्रा वाक जितू तम दुरशह, जुलमां मा करा ॥ শেতপরে বিরাজিতা, খেত-কলেবরা। गम्ह-कलानिकता, अख्वाम शहता। মনুর সেতার বীণা, পুস্তকগারিনী। हिठउँ भरतभगाडी, असूध-शाहिनी। मत्य जांदर हुँद्र तांग, रुजिया तांगिनी। वाणिनोत्रा चारा किना, चग्छजीविनी ! नंड नंड मश्हरी, बाद्ध मृद्य मृद्य । दिखार उटक एक्टम जात, सूर्थत छत्र हा किना हमश्कांत मात्र अटकत जून।। अिं गटनांध्त गर, अमृता द**ुन ॥** धनत्तरम आहि जीह नखजीत होत। विनदात हाक हिक् त्नोट ह काटन छोत । উপদেশ-মুক্তামানা, कर शांत जोता।

रावमा रुतिता त्वव, कता बाहि यात्र

### (वार्थमम्बद्धः)

শাত ভাব-কঠমালা, পার কিবা সোভা। विदरम्बा-माजनद्ग, विवासत्नात्नां । ঈশভক্তি-মুকুট, মাথার সুশোভিত। গুড়ভক্তি-চুড়া তার, কাছে বিরাজিত 1 चामी रठां-क्ष्मानी, अजीव स्थकः । নিপুণতা-গুজিকানী, অতি দীপ্তিকর। মাতৃ ভক্তি-কাণ বালা, সুচাৰ কেমন। পিতৃত্তক-বোঁদাতেই, লোভিছে অবন ঃ क उञ्चल-कूनग्रका, अधि भर्रनाहरः। সৃদ্ধি-সিঁতি শোভা করে; ভারের উপর। दुद्धि-कवतीर वैशि, जार ह खाम-कृत्र। पूरे कार्त बुनिएउटर, व्यक्तिम-दूर ॥ गिकें जाया-मर्थ त्यारत, गडाकी-मलक। সত্যতার বাজু কিবা, মানসরঞ্জক । ভাবে ভাবেলা শোভা পায় প্রশংসার টিপ্ माध्या-मिक्र हान, खिलाउटक मील । श्टर्भत्र जोविक शास्त्र, महा-श्री हरे जाता। পরউপকার-টাড়, অভি চনৎকার গ ধাৰ্মিকতা-বাউনী, কেমন শোভাকর। भवत जी-महतानी. त्यां ही करत कर ॥ পুচরিত্র-চাল্রানা, নেত্র-সুখকঃ। বিজ্ঞার জবদানা, দেখিতে শুন্র ॥ व्हिलाम-वर्गिजोत्रं, गाहित्कन-फून। अनिरात्र प्रमुमम्, सूत्रीक अजून ॥

## (राद्धमृत्या

सन्योहका-वाना, भड़ा हुई करता বক্তা-শক্তির করণেতে, মনোহরে । कैंकिटिनट्ड भौतमर्नि डोत हत्म कोत । ছির প্রতিক্ততা-গোট, কাছে আছে তার। शांद्र शहां नित्रखह, व्यविदान-मल। পরছবে কাতরভা-পাঁজর অমল & धीतर्छा-सक्षमं कांत्र, मार्टिश्त अवती । किया बमनीत जांचा, मति गति गति गति ॥ যাহস-চুটকী, প্ৰাস্থ লে খোভা পায়। रगोतदबद्ध भिठवांशा, माम-रथावा छात्र । এইরপ কত রপ, ভুষা অপরূপ। সর্ব্য গার শোভা পার, আমরি কি রূপ গ ছেরিয়া নিশিষহার।, সম নেত্রয়। अरक्दारत अवोक, इरलम तम ममत् ॥ कृशांकती कृशा करि, रहमम उथम। अञ्जा अपूजा, रोहां! आंगोत कृष्ण । अनुगंड स्टब्स द्यवी, सम शृंबी कृटत ! बरे नव जूबा जांद्र, निर्दे नवांनद्र ॥ দইতে এসৰ ভূষা, বাসনা বাহার! निवानिनि करत रमहे, वर्कना योगोत । खीटनाटकत अञ्जल, श्वटन ना भटत। श्रक्टय श्रीतित लांदि, छेशहांम कृति । खीरलारकत जुना बरहे, अमर जुन्न। खोटलांटकता शरत बटडे, यथन उपन ह

# (वार्यमम्मत्र ।

मातीत कृष्ण रांहां, त्यशादन वा माटक। महे नात्म थर्ग उ जूनी, अ म्ह विहारिक व मादित छुवन गऊ, अ छूवन सरा। कनक शीतरक किছू, निर्मिष्ठ मा इस । महागृला वल जांत, कि जांदह अमन। ষাতে মম ভূষামূল্য, হয় নিরপণ।। शूक्रस आंभाद कृमा, कब्रिटन शहर। এক মুখে ভার রূপ, না হয় বর্ণন। পুরুষের যোগ্য বটে, মম অভরণ। ভাল রূপে জানে সেই, পেরেছে বে ক্ষম মম ভূমা, পারে দেবা, পার সেই যপ। निमा कता मृदद श्रोक्, मटन जांत वर्ग । এইরপ কভ ভ্যা, আতে মন যরে। মত দান করি তত, বাড়ে করে করে। মারী হয়ে চলি আবি, পুরুষের চেলে। মম ভুষা পেতে চাষ, সুৰোধ হৈ ছেলে। बामात हत्रान बाहा, लहरल भारत। खनाशांका सुद्ध कहा, जमन कहल ॥ এত বলি বাগীখনী, অতিশ্য মেহে ৷ मरक लट्ड एलिटलम, आर्थमात शास्त्र ॥ যেতে যেতে হেরি যত অদ্ত নাপার। বর্ণিতে দে সৰ সদা, ছাত্রে বর্ণহার॥ प्तरीत मश्कि शिशं, प्रतीत मन्तिरः। कतिमान क्षरवन्तं, जल्दा धीरत धीरत ।

रिमालन खनरेकी, युत्रमा जामान। হেরি নব ভাব কত, আবির্ভাব গনে। সেবিতে প্রীপন তার, করিয়া কামনা। শদভলে বসিলাম করিতে, অর্চনা ! थांद्र अंक मोदी बोर्डा, अमन मगरा। ভিপদীতা হইলেন, দেবীর আসমু ॥ শত শত সহচরী, চামর ঢ্লায়। আহা किना मबादहार, तला माहि वाह P অতুল বিভব তাঁর, অতুল বিভব। मरक मरक अरला उँ।त, ठांकी इस मर ॥ আসা শোঁটা কত মত নিশানের জাক। মতী বাজে, ঘন্টা বাজে, বাজে কত শাঁক। हान हेरक कड हानी, हानीशाक थरन। शानकी बनुक नरंत, जीत झूरफ़ रकरन ॥ কত মত জহরত, মুক্তা জোড়া জোড়া। हुनी मनि, छोकां जात, त्मांश्टतत ट्लांड़! । এইরূপ সঙ্গে তাঁর, কত আড়ধর। হেরিয়া আমার হয়, সভর অন্তর ॥ অনুগত কত লোক, সন্থে দাঁড়ায়। धक करम जितिहारे, गुड कम शांत । মাতলগামিনী তিনি, কুরজনয়না। मुल-करलवरां उत्, कमल-आंमना । অনুভাবে বুঝি তিনি, সভাবে চঞ্চদা। धक हैं हि छित्र मंगू, यमन हक्षा ह

পুণা নাহি যায় তাঁর কত অলকার। स्वर्गंद्र शोक विम, करलदेव जीत । जाशांदिक करलाइ दिन, मिन मुक्तां कता। মূকু মূকু করিতেছে, অতি নিরম্ল 🛚 छाँदा द्वित बांगरावी, अि मगांनदा। কাছে বসালেন আশু, ধরি তার করে। दिलालन वल खान्, अछ मर्याजात । কেমন আছেন সব, স্বজন ভোমার ! বহু নিবসের পর, দেখা তব সমে। কি কারণে আগানন, আমার সদদে ? পরে দেবী যম প্রতি, দৃষ্টিপাত করি। হেদে হেদে আমায়, বলেন শুভকরী 🛭 প্রতিধান কর বাহা, আমার বছনে। আমার ভাগনী ইনি, জানে সর্বাজনে \$ देशंद आंशांन लग्नी, ताक हताहदा। धनालांद मार्थि थात्क, देनि श्राल गरत ॥ विनाति नेपती रहे, व्यानि त एमन। धरमय केनाती कम, है जिन् उनम ॥ এ বনেও আছে বাছা, ভবন ই হার। ঐশর্যোর কথা আনি, কত কর আর চ क्यार्डित लारिक जानि, विमानं कति नामः ইনিও অতুল ধন, করেন প্রদান। षांमारक त्य करत भूकां, विना भार त्महे। वे बारक य भूरक, जांत धनांकांव त्यहे।

\*\*

এই বনে বাকি राष्ट्रा, আমরা ছু जन ; मानदात कति कछ, कलानि माधन । व्यामारिक व्यक्तिकात, श्रा मग्रम्म । আমানের ছাড়া বাছা, কিছুই না হয় ঃ কেই এঁৰ অনুগত, না চায় আমায়। क्ट में अंजुर्गेड, हैं होटक ना **हां**श्र কেই কেই আমাদের উভাগের ময়। আমানের অর্চনায়, রত নাহি রয় ! काराजित्व कांद्राम्टम, शुक्रा कदत बाता। আমাদের প্রিয়পাত, সদা হয় ভারা ন बामका को बना किছू, श्रामिनी नहे। क्वल के खित (जारत. वामा मना तके I আমার অনুজা ইনি, তামি এঁর বড। रा प्रति मर्ग थिंडि, एकि राउ पर ॥ टेमबटगारण याहे जाबि, हे हात मनन। इंगिहे आरमम (इश्न, यथम उथम ! নিয়ত রাখেন ইনি, আয়ার সন্মান। मम शहारकी का करवन, दश्कान ॥ ষধন তথদ ইনি, সাধিতে স্ব কাজ। नहें का मांत युक्ति, ना कदन वाकि त्यारमण्ड इत वांही, खांबात शमन। সেথানে যাইতে সনা, ই হার হতন ॥ ममा नेंहकाद्रि दक्तां, कृद्रम विक्रतः। व्यापि मां थाकिटन हेनि, श्रांतांखन गर-।

याद वां की शिशं हैनि, इंस अधिकान। তথায় আমার দেখা, যদি নাহি পান ॥ আশুগতি তার বাটী, করি পরিহার। ন্তানান্তরে যান ইনি, সংশয় কি তার?॥ क्मलार शरिक्त, अडेक्ट्र निया। क्रगाल तक्टिलन, नीत्र रहेश॥ উভয়ের অভরণ, করি বিলোকন। মনে মনে করিলাম, তুলনা তথন ॥ কমলার অলস্কার, মুনোছর বটে। भीखिगान द्याला ना त्या, यांनीत निकार ॥ লফ্রীর ভয়ার আছে, অনেক কুত্রিয়। সরস্বতা-বিভ্রণ, সর ভঞ্তিম। लक्षी-पृथा छेन्छल, मांथारक हिंद निम । কিছ দিন পার ২য়, সকলি মলিন। বাৰহাত্তে জনাহাদে, হোতে পাত্র কর। পুর্দারণ মূলা তার, কথন না রয়। বাগীশার ভূষা সর, নিয়ত জলর। बावशादत मुला बाटफ, काटल माखिनम ॥ विद्यानोत विमा कात, भरमनात सम। কি বড় কি ছোট, কিছু হোলো নিরপা। । श्वनतांत महत्र इत्, मः नव छत्त्व। দেখে শুনে কোনমতে, বোগোদহ নয়॥ निविशा नक्ती-शात्न, हाई अकतात। महत्रकी-शारम करत, प्रिथि शूनकीत ।

লক্ষ্মীরূপ বিলোকন, করি যে সময়।
লক্ষ্মীকেই একেবারে, বড় বোধ হয়।
আবার বাণীর রূপ নির্থিলে পর।
বাণীকেই বড় জান, হয় আশুতর।
এইরূপে মনে মনে, কড ভ্রমোনয়।
কোনগতে শাহি হয়, সংশ্য বিলয়।
তাবাক্ হটং৷ জানি, থাকি এফ পালে।
কোন কথা জিজোসিতে, নাহি পারি তালে

#### সরস্বারি প্রতি লক্ষীর উক্তি।

সত্য বটে, আমি হই, তোনার অলুজা।
সতা বটে, তুনি হও আমার জ গুজা।
সতা বটে, বাখি আমি, লোমার সন্মান ।
সতা বটে, কর তুনি, পরামর্শ দান ।
সতা বটে, কং তুনি, পরামর্শ দান ।
সতা বটে, কং তুনি, আমার কল্যান ।
তা বালে কি, সর্কাত্র করিবে অপ্যান।
ভোটে হই বলিয়া কি, নাই ম্ম মান ? ।
এমনি কোনে কি নিতে, হয় পরিচয়।
এমন বলন বলা, উচিত কি হয়? ।
বিবাদের ভটে, কোন কথা নাহি কই।
মধন তথন তব, বাক্যাণ সই।

# (वार्यनमृष्या

বড় বোন বোলে কত, মাল রেখে চলি। शंमिश छेड़ाई गर, किंछू नोहि योन ॥ আমার অপেক্ষা তুমি, বড় বড় নও। ত্তিব কেন বড় হয়ে, মানা কথা কণ্ড। রাখি মান, তাই খান, পাও পায় পায়। আনি না মানিলে কেনা, মানিত তোমায় ? ॥ বয়সেতে বড় হও, ক্ষতি কিবা ভায়। কাজে বড় হোতে পারো, তবে বুরা যায়। আর না আদিব বোন্, তব নিকেতনে। এইবার শেষ দেখা, হোলো তব সনে॥

সরস্বতীর উক্তি।

আমার বচন ধর, ক্রোর পরিহার কর, ক্রোস করা না হয় উচিত।

বনিল,ন মতা কণা, তাতে কেন পাও হাখা,

কি বুনায়া ভাব বিপরিত।

ছু বোনে করিলে স্বন্ধ্ন, লোকে কত করে মুন্ন.

নিয়ত করিবে উপহাস।

अनुका जितनी द्यारम, तिम कर्ने कथा स्टारम,

केंद्रिट कि बान मान मान

প্রণয়েতে হয় খাহা, বিবাদে দা হয় তাহা,

ज्ञात कि जाम ना रिटारिनिम।

भारता आंत्र माहि बारमा, बिर्क ठूमि छात र

মানি কত মেহ-প্রকাশিনী।

তুমি গুণবতী সতী, কে দিল এমত মতি,
আজু কেন স্বভাবে অভাব ?।

যত অনুরাণ তব, করিলাম অনুভব,
কি কারণে ঘটিল এ ভাব ?॥

অন্য দিন হেথা এমে, কথা কও হেসে হেসে,
স্লানমুখী কথন না হও।

হেরিয়া তোমার মুখ বিনীর্গ হতেছে বুক,

স্বন্ধ হেডে ভানা কথা কও॥

#### लक्षी।

भिक्कः त्यन वक जात, निकां त्वम वक जातः

कानतत्य जानिजाम, कर वारकातः

कानतिय जेपता, कांग्रं त्यानत जेपतः

काना त्यान वक द्यान, गढ त्याक शतः

काना त्यान वक द्यान, गढ त्याक शतः

काना त्यान वक कांग्रं, गढ त्याक शतः

कि करेता त्यांका कांग्रं, जतः कांग्रं कां

वाला आबात कि मारे ? बाला आबात कि मारे ?। यथन या हेक्क्रा कति, अमोशास्त्र शोहे ॥ कति अमांगा माधन, कति अमांता माधन। দৰ্কারাধ্যা, কই আর আমার মতন ?। কেবা না প্ৰে আমায় ? কেবা না প্ৰে আমায় ?। আনার পুলিয়া কোপা, কেবা কি না পায় ?। मगारनरन रक मां हरल १ ममारनरन रक मा हरल १। मकरलई शास्त्र और इ. मम श्रीन जाता ভেবে দেখন। ভূমিনি! ভেবে দেখন। ভূমিনি!। আমার মতন আর, কে আছে ভোগিনী গা দেখ মম মান কত, দেখ মহ মান কত। অবিরত অনুরত, ধরাবাদী যত। मटर इट्स এक्सन, मटन इट्स এक्सन। মামার পূজায় রত, থাকে অসুক্র।॥ कारता व्यवमह मांहे, कारता अवमत माहै। ক্ষেবল কামার তরে, গুরিছে শবাই। কেউ অনিয় ভূলে না, কেউ আনায় ভূলে না। আমার দোষের কথা, কথন তুলে না। যত ধরার বিভব, যত ধরার বিভব। আমা হোতে হয় সব, আমাতেই সব॥ निनि! आरि मई थांत्र, निनि! जांत्रि नई शांव। थांकीयन पूर्वगांत, मौमां माई जात # বিনা মম সহকার। বিনা মম সহকার। गश्मारत योकिटा भीरत, रहन माथा कात् ॥

া দব করিব প্রচার, সব করিব প্রচার। তবে তো জানিবে তমি, ক্ষমতা আমার #

> আপনি প্রবলা, কমলা অবলা, निमि! गत्न कि ८७८वछ ?। হোরে বুদ্ধিমতী, ত্রি সরস্বতী, ভাষকপে কি নেবেছ ? II মামিও তোমার, কত উপকার, कतियाहि क ना जारन ?। সে সব এক্ষণে, পড়ে কি না মনে, মত হোগে অভিমানে ॥ एका वे बहु कारन. कोटल कोन कारम. তোনা হোতে ছোট নই। यादन जिल्लानितन, तमहे ट्लां नित्तन, আমি কৰ বছ হই॥ প্রার বিভব, যত দেখ সব, নিনি আমারি তো হয়। যা আছে গাহার, সকলি আমার, আমা ছাড়া কিছু নর मम निरुक्तन, मन जैश्वन, मम एक उक्तान। সুমধুর ফল, তাহাতে সকল, শোতা করে উদ্দীপন।

# ' (वादभक्षम् मग्र

किता मटमाहम, वांशा माहे गग, আমারিতো সরোবর। আ্মার বসন, আমার ভ্ৰণ, মম মণি যুক্তাকর॥ মুম ধাত হত, আমার রজত, আখার কনক সব। ক্ষতা আখার, কেমনে ভোমার, मिनि इत अञ्चव ।। তামার প্রবাল, আমার ভ্যাল, আমাৰ শালের যোডা। মাদারি ভো ঘড়ী, আমারি তো ছড়ি. আমার টাকার ভোড।। শাশার মাতক, আমার তুরজ, আমার সহিষ মেষ। আমার বলদ, আমার গরদ, আমার বনাত খেল ॥ আবারি তো গরী, আমারি তো ছবি, আমাৰ ইবঠকধানা। আমারি তো সেজ, আমারি তো মেজ, আমার বিভানা নানা ॥ আমারি তো পথ, আমারি তো রথ, আমারি ভোষক গলি। আমারি ভো জল, আমারি ভো স্থল, व्यानांत मांगत, नमी ।

আমারি ভো দাল, আমার জাহাত, আমার ভাষার পালি। मकल क्षकांत्र, उत्नी जागांत्र. আবার যে দাঁত হালি। আমার ওদন, আমার বাঞ্জন, আমারি তো দাস দাসী। जदम खड़ार, मामशो जभार, जाकारीय हानि सानि ॥ আমারি তো জাঁক, আমারি তো গাঁক. शासात रमक वांगी। আমারি ভো তাক, আমারি ভো চাক, আহার সাঁদাই কাঁসি॥ कांग्रांति एका तमा कांगात शासमा. আমার সকল রাজা। आहात अशीन, क्टांट्य निमि निम, अद्य कृद्ध बाबा कार्या ॥ सम मिश्क्षामन, सम त्मनांधन, गम समार्थित यह। (किश्रा तिथे मां, क्रांमिश क्रांम मां, জামার গেরিব কড ॥

ভাগিনি। বিবেচনা করিয়া দেখা তুমি আমার অপেকা কোনমতে গ্রেষ্ঠা নও। এই জগন্মগুলে যে ছলে যাহা আছে সমস্তই আ মার অধিকারভুক্ত। আমি বাহাকে বাহা
দান করি দেই তাহা পায়, নতুবা কোন রূপে
পাইবার উপায় নাই। যে ব্যক্তি আমাকে
পূজা করিতে কিয়া আমার অনুগত হইতে
ইচ্ছা না করে, তাহার দুর্দশার সীমা থাকে
না। তজ্জনা আমার উপাদনা না করে, এমন
মানব অতি বিরল। যে ব্যক্তি আমাকে যেনপ ভক্তি করে আমি তাহাকে দেইরূপ ঐশুর্য্য প্রদান করি।

আপনাকে আপনি বড় বলিলে কিছু বছ হণয়া যায় না, লোকে যাহাকে বড় বলে তা-হাকেই বড় বলা যাইতে পারে। কিন্তু যখন আমাকেই সকলে বড় বলিয়া থাকে তখন আমি যে নিশ্চয় বড় তাহার আর সন্দেহ কি আছে।

#### সর্হতী।

কি কথা বলিলে বোন্, শংনে ছাসি পাছ।
আপনাকে বাড়াতেছ, কথায় কগায়।
লোব ভৱে করিতেছ, আপন বড়াই।
ছি হি বোনু কিছু কি নো, বিবেচনা নাই।

पूर्ति यनि कर्षे वल, निका गाँँ छात।
भावा खान कि ति एक, विभाव धवाय॥
थानि यनि कर्षे कथा, विन त्वा ति शामाय।
थानि यनि कर्षे कथा, विन त्वा ति शामाय।
थानि यनि कर्षे कथा, विन त्वा ति शामाय॥
थानि एक ति मकत्वहरूँ, मृथित्व शामाय॥
थानित छेउतात, श्रामित मर्ग्व क्रम ॥
भोतित कर्षा थात्र, श्रीकित्व मां भावि।
तमारकत कथा थात्र, मिश्व भावि।
वार्षा मख हात्व थात्र, थात्क ना कि खान

#### ল স্থা

(श्रीमात वहन श्रीमा मर्गर्स काल मार्टि ।

किम जूमि वर्ड इस्त, ने ए दिनी वर्ड ॥

विक्रामिति दिन कार्त, किटि एक रिमान ।

क्रिया कि चुक्ति मां, ने ए वर्जा दिएले ॥

क्रिया वर्गन्, ने फिल्मा, के ने अर्थमां ।

हुनी दिन्ना, ने किटिंग, के अर्थमां ।

हुनी दिना, ने किटिंग, के अर्थमां ॥

वर्गीम मार्म क्रिया किता, किर्मा क्रिया क्रिया ॥

वर्गात वर्गातम, वर्गन्न कर्मन क्रिया ॥

वर्गत वर्गातम, वर्गन्न वर्गन्न, दिन क्रिया ॥

वर्गत वर्गातम, वर्गन्न वर्गन्न, वर्गन्न मार्टि ॥

वर्गनित क्रियल क्रियली, निकाम वर्ग महि ॥

विक्रियल क्रियल क्रियल मार्टिय क्रिया ॥

क्रियलिए, क्रियलिय, चिन्निय क्रिया ॥

# (वारधन्मृमञ्।

#### সরস্বতী।

এত লো উতলা কমলা কেন ?।

চঞ্চলা মতন চঞ্চলা যেন ॥

তিনিনি ! আগার বচন ধর।

যেও না ক্লেক বিলম্ব কর ॥

কিলের কারণ এতই ক্রেংপ ?।
উন্মতা তোমায় হোতেতে বোন ॥

এলায়ে পড়েছে, মাপার কেশ।

লাই কি তোমার ধীরতা নেশ ? ॥

#### लक्यो।

বেখালেতে মান গাই, শুধু গুপানান।
উচিত না ধ্য় সাথ, তথা স্বজনে।
আনি কি মানানাল গেছে, ভেবেজ ভিনিনী গ।
মহীতে নবের আনি, পানলকারিনী ।
আব গোটা জত কথা, বোলে এই বাব ।
ভাল যোলে জানাইব, ধ্যমতা আমারে।
বুলিতে আনাা, মানা, মাধা আগতে করি।
নানা জালে নানা ভাবে, পরি নানাচার।
অনস্ত জানাই জীলা, অনল মহিমা।
নিলপন কে করিবে, ম্য গুণ্যায়। গঃ
সন্মালা বর্জিয়, ম্য জনিক্রি।
নানা ভাতে জগতের, কত উপক্রি।

आंगांत कृशांत वारः, मयुम्य जीव। আনা হোতে হয় শুধু, সংসারের শিব ॥ रहेटल आंगांत दक्तांत, घटि महातुत । मञ्चल मह जाटम, माती उन्नहता। लक्षीइडिं। इतन (मथ, मोना ज्वांन घटें। সবুদ্ধির বুদ্ধি আর, নাহি থাকে ঘটে॥ (अटडेत खोलाव इत, मन खोजाउम। মান্সিক শান্তি নাশ, পায় প্রতিক্ষণ। পেট পেট কোরে দেশ। নিয়ত বাকেল। शक्ति (शहिंद म्रांग, अनिमाद मला কেমনে ভোষার ভক্ত, হবে মেই জন ?। কোনে তোহার প্রতি হাবে তার মন ?॥ ষাহাতে পুভিবে সেই, ভোষার চরন। क्रमारम कहित्व वस, छाड और शास्त्रमा । क्रमरम (म. धकाभिटर, दुक्षित को भन तः কেমৰে ক্রিৰে ভোগ, কেলিলেই কল ।॥ दरमटम €म भिटन छन, मट७ मछ नान। কেমনে ভৌনার পথে, হবে আওয়ান ? ॥ কেমনে করিবে তব, গুণের নাথান গা কেমনে রাখিনে সেই, ভোমার সন্মান ?। সভা বটে তব পথে, করিলে গমন। আন্থানে হয় কড, হসাধ্য সাধন # बगरेन-नियां हशे, अंजि उरहती। आगतन एउपार ११थ, नांना गांश शिं ॥

# CHESTER !

व्यक्ति किया शिक्त, जीत सर्ग है ते।
अहितारित किटित कि मूल है।
उट दे कि व्यक्ति है।
अहित किटित कि महित है।
अहित किटित कि व्यक्ति है।
अहित है।
अहित है।
अहित है।
अहित कि व्यक्ति कि महित है।
अहित कि वर्ग कि महित है।
अहित कि वर्ग कि महित है।
अहित कि वर्ग कि कि कि महित है।
अहित कि वर्ग कि कि कि महित है।

भारत के माह निनि ! कक तर्शम व !
असंग्र कार्यात जान, कालित निन्छ ।
त्वान तर्श होई कार्या, कार्यात कार्यात ।
अकान कविया विन, मत गठ कार्यात ।
आगारक किन्दिर भारते, कार्यात एक एक ।
आगारक किन्दिर भारते, कार्यात एक ।
अगारत कार्या के कार्यात कार्यात एक ।
असंग्र कर्श मार्या कार्यात कार्यात ।
असंग्र कर्श मार्या कार्यात कार्यात भारत ।
असंग्र कर्श मार्ये कार्यात निर्म्य मार्या ।
देशम कर्श्य मार्ये कार्यात निर्म्य मार्या ।
इति केरित कीर्यात कर्यात ।
इति केरित कीर्यात कर्यात निरम्यका ।
इति केरित कीर्यात कर्यात निरम्यका ।
इति केरित कर्यात स्थात कर्यात निरम्यका ।

पता जार गोरे जामि, उँड़िन मनिता। णक्तित गृट्ट बहे, गणि, मुक्ता, हीरत । वर्गित-गृद्ध इडे, खूबर्ग कृष्ता। य्वधन-ग्रह भति क्रिकेत ग्रहन ॥ कॅमिकि गरे हैं के, यही तांही शाला। गालित डेक्टम इके, कुक्रमत मोला। शान कर्श बार जावि, तकिक-जागात। स्वतात ग्रेटर बेडि, मत्मम-आकात ॥ ममोडांबलंड बंटलं, मन्त्रांबक-त्राट्ट। অবিছিত্তি করি জানি, অতিশয় মেহে। ্ষে যার ভাবসা করে, আমি মেই বেশে। जीत यदरे नाम केति, मकन औरमरमे ॥ दानक्षि (जीशां जका, मीमेजी-मिन्न। मकनिस्का अधि, मन अभिटिंडे इस । नामि उक, जामि गुल, जामि कूल, कल ! आदि होता, आदि कड़ी, जारि एक कम। আনি বেশ, আনি ভূষা, এআমি পরিধান। जामि मून, जानि, होनी, जानि होन शन म মবল এলাড় আমি, আমি দাবুচিমি। ভাগি দৰি, আমি, ইন্ধ, আমি য়ত চিনি। অমি ভাঁড়, আমি খুরী, আমি হাঁড়ী শরা। আনি মন্ত', জানি গোলা, আনি রস্করা। व्यक्ति गढ़ा, आवि थोडा, आवि छानावड़ा। व्यक्ति हाएं।, व्यक्ति त्रक्ती, व्यक्ति जानि जाने

### (वार्थनमून्य ।

जामि धुंजि, अपि भागि, जामिहे कंगीन। जामिहे उड़ानी जात, जापि सिंछ। मान में সামি যোড়া, আমি গাড়ী আমি নিকেতন। अ। मि भीन्की, कारि छोकी, आपि कार्कोगम পরাতদে এইরপ ক্র ক্রাণ্ন। নিয়ত নরের করে কল্যাণ সাধন। मकरलंद छेलेरह, खायांत श्राष्ट्र श्रीय। সহতে না বুলা যায়, আমার এ ভাব। আমার সক্রপ সব, আমার স্বরূপ। क्तरत शहल बार्ड, नांत आंत क्रिं। দলত সকলি এক, কি আছে সংশয। रिनिम्य करितलहे, धन लांड इस। मनात नेश्वती कामि, सन त वांचीत । शामि पार कांकि छोटे, ठॉलटए भरमाह : गम अनुहरू छल, उहांगारम बरु। লোগার কি অনুগত, ভক্ত আছে তত ?। कर खळ ह्रांट कह, महस्य ने ही।। ণত ক্লেশ বোধ করে, শিশুসমুদীর। তব ভক্ত হোতে घराई इक्तिक्र है माम। তারে তারা একেবারে, করে অরি তেনি ॥ তৰ প্ৰতি ভক্তি নিনি, স্বাহাৰিক ন্য। করিলে ডাড়না বহু, তবে মন লয় ট मम जल होट होए, इक्तशीरा इतन। असा अवा कारन तमा, मीना जीवि लीता কথৰ ৰা চাৰ শিশু, পুৰিদে ভোমার। जात मांछा अहे कथा, रिनाम दुनात है " राष्ट्रांतन ! दिलायन, कर छेशार्कन। गातमात भूजोकक, तिमार कोतले ह दिना दशदम महिन्नि, कड थन गाँदर। गाणी कांचा लाएक कृति समोदम तकारत। विवार मा विकास वाष्ट्री, रकाश शीरत अस। ं . दनगरम शाहित स्थरत, सबनी यावम १॥ क्रमटन श्रीतिक भेटत, डेखम तमस १। किट्न भीतं असकात, इटत कर अस १॥ दिन। ना भिषितन वाही, दिवाह मा श्टर। भावेतफ दशदा छूमि, वित्रकाल ब्रद्ध ॥ अमुरकत रमहकां छिटल, 'ब्राटनाथ नवीम। निरंथरेक बर्बक विमा, लाए निन्। हिन ह जहित्ता अथम तम, भारताह डेक्न्नम । ্ভাই তার কত মত, বেড়েছে সম্পাদ ॥ मन्पादकत उद्य खात्र, कडने दर्गाहर। रहेगाटह वंचीकूछ, मकन मामर ॥ दिना निथिताई गांड अन मां इत ह वन जोंड ।होरन लिकि, कर सूर्थ उन्न णारे नित्र अंद्रा राष्ट्रा, जेमारम्य धत्र। (थनांत्र मा दर्गातं त्रज, त्नथा शंका कृते। वानाकारम त्नभा भंड़ा, मा करहे (व ह्हिता। हबात नगर हरत, यूद् (बेटल हबरन ह

शदत जोत कुःथ कम्, दौरा यह कान। जात कुर्मभाग कैंदिन, कुकुत भिग्नील ! लिया भेड़ा रमार्थ महि, अरमद कामाहै। দ্বঃথে জংখে ছাড় মাটী, হইতেছে তাই।। जीत्या किছू कूल दिल, कुल मौड़ा फिता। ্দ সময়ে তাই ভার, শেমেছিল বির<sup>া</sup>। এখন তে। নাই আর, কুলের বডাই। একেবারে পড়ি।তে, কুননানে ছাই। কাদীয় বপাল হন্দ, সন্দেহ কি তার। তাই তার ছাতে পোড়ে, হাহাকার সার । কিছু লেখা পড়া যদি, শিংগত সে চেঁড়ে। তবে কেল গালি নিত, থোলে মুণুপোড়া। ত্তবে কি হাইত কেউ, তার প্রতিবাদী ।। सांख कालर ५४ छटन, के जिल कि काजी है। শক্রমথে ছাই নিয়ে, দটীর রূপায়। अधिक उ एक ति हाइह, चरिक्क कि माहा বাঁচিখা থাকিও যদি, কাদীর মা বাপ। তা হোলে কি হোতো ভার, এতই সন্তার্প ॥ ভাই যে ভেছের বশ, হেবিটেছ সদাই। অন্তর্র ভাই তার, বেঁচে থেকে নাই। छोड़े प्रमन्न (करल (भटनेत ब्रॉरि डाज । कारा कुँड़ी १४ रहे थरहे, मरत दिन उछ है পা বিয়া ভাষার ভাষ, পায়ের উপরে। কেবল বসিয়া থাকে, কিছুই না করে।

भरां जरल वनशीन, यांगी इस शह। এরপ ছर्क+। नाष्ट्रा, गटि शांटक ভার। নাহার দ্বী প্রচেরা, ভাতের কেশ সয়। जीत कि श्रंक्य कहे, श्रुकर कि मह ॥ অভএব প্রান্ত বাছা, হও সাবসান विमां आदलाइमां कति, इड विमानान । नक क्लोटन की शटलकां, कश्म दर्भागत। . ভাত কাপডের ছাবে, কাঁদিবে না আর " ম शहेकाल कमनीता, विविध वहत्य । নিভ'নিজ শিশুগাণে, ভলায় মতমে। सम-स्थामा कान्य किया, अर्राक कोनाता। তোমাকে প<sup>†</sup>িজতে দেখ, শিশুদিয়ে বলে। আমাৰে পাহার ভবে, অন্তমা ভোমার। আমাকে পাইলে মন, সম্প্রেম সবার॥ আমাকে পাৰাৰ হামা, ধৰি লা থাকিছা.. ্চামাকে পাইতে কেবা, হতন ক্রিড ।।

#### ् महञ्चर्छी ।

আমার ভারতী, শুন লক্ষী সতি, কিঞ্চিৎ গীরতা গর। কেন স্থসা মহু, করিছ কলহ, আশু ক্রোণ পরিষর॥

#### (कार्थक्ना।

তুনি বিৰোদিনী, অনুজা ভণিনী, তাই এত কথা সহী। যনে গত আছে, বল মম কাছে,

ভাতে বিবাদিনী দই ॥ বাছাতে আমান, তা গুণের গান.

আহা! করিলে সৌ দেশ। চোলো কি কারণ, ভোমার এখন,

মন প্রতি এত বেশু গ। মূপে আপনাব, বেগুণ প্রচাব,

ক্যা অমুচিত জতি। ভাই চুপ ক্রি. সাধা ভাব ধবি,

রোধ্যক্তি সোধ্যনতি ! । পাত্র কলি বেশ, ভাবিয়া নিশেষ,

त्भावन करित करता

যথম গেমৰ, তথম তেখন,

করিয়া সময় ছতে । আমি নিজে বানী, বলি সভা বানী,

मान करिएंड कि शासि। जोगांत विश्वत, करना च्छाड मह,

আনি নিজে যত জানি।। তুমি নিজে মানা।, জানাকে সামানা।,

তেবেজ কি মনে নাম।
ফামার বচম, কবিলে শ্রিবণ,
ভ্রম কাবে ভাতকাণে ঃ

मना बढ़ के जुनि, क्यारजब निर्व मठा राष्ट्र (जामा दिश्ली किन्छ कीर ॥ मठा दर्ड मकर्त्सड, उन अर्थेनीर्ड। मक, वट्डे जटवं दनहरू छत्र बरंड गंड ॥ मठा रहि महानेहै, छोमारक हाह। মতা ৰটে **সকলেই, পড়ে** তব পায়॥ সতা বটে নানারপ, তোমার ফাকার! সতা বটে জৌমা বিনা, চলে না সংসার॥ मना बर्षे नृमि इट, भर्तान तिजन। সতা ষটে ভোমা হোতে, সকল উদ্ধ। গাই ভূমি আপলাকে, কর বছ জান। তোই তৰ বাড়িয়াছে. এত অভিযান 🛚 ভৌমাকে সামান্য নেত্রে, দৃষ্টি করে হালা। ভোষাকেই বড় বোলে, জানিয়াছে ভার। भर्तात अट्यर क्लांक. मार्मामा नगरन । ভৌমাকে হে দরশন, করে প্রতিক্রণে॥ ट्यामांग अस्मरक छाई, राष्ट्र रिन कारन। ভোমায অনেকে তাই, বড় বলি गोरिन। জ্ঞান-নেত্রে যে আমাহ, করে বিলোকন। আমি বে কেম্ন ওলো, জানে সেই জন। অল্প লোক আদ-নেত্রে, হেরে লো জাগান। মম দরশন তাই, অপে লোকে পায় ! अन्थ त्मारक छाई तान, मय धन शीह। मम अरहरत। छोटे, जन्म लोरक थीत ।

### (बाद्भागमा ।

निर्णास काला काला, निर्णास व्यक्तान। क्यरम अमिद्द जोती आसीत गंभाम ? जल्लानज-कृत्न जूरत, अरमदरहे औरह। ्क्यरम आमित्क जाता. शांद्र सम कारह ॥ महरकडे भागभाष, जत्मरकडे वीत। भक्तभारं पारक कारल, यह है कड़ नात । मकरलई भागभाष, करतरक भरम। धर्माश्रद्ध शर्मा हेम, करतरह क सम ? ॥ भारभत करभका यमि, धर्म द्वारि रह। তা হোলে সামি লো ছোট, হব লো নিশ্চা গ ভালানের। রভ থাকে, ভোষার সেবার। তোমার ক্রারীর রূপ, তাদিবো ভুলায় ॥ রোগির কুপথা খেতে, সভা আকিঞ্চন लेमन शाहितक रमने. मा कांग्र कथम । তাহার আজীয়গার অম্নি তথ্ন कछ कथा तर्रम जात, मरनद्र मजन ॥ "कडेवात कर्त कत . छेच्य टमवम । यो চाहिट्र डाइ। स्थटक, कतिन जर्भन ॥ (थटक मिन मामा कन, भीकम कीनम। খেলে সুস্থ হবে তব, তাপিত জীবন "। कुभशा थानांत कारण, तम द्वाली त्यमन। ইচ্ছায় প্ৰয়ৰ পান, কল্ল ভভক্ষণ ঃ মেইরণ মাড়া পিড়া, অভি সম্ভমে। धनलां अपेशा निर्धाः चूलांत मन्यदत ।

2

धनमां छ आंभा कति, रामक-निम्हा অবিরত আমার, সেবলে রভ হয়। অজ্ঞানেরা মনে ভাবে, অর্থের কারণ। मश्मादिह (क्वल इह. विका श्रीदाकिन। তা হইলে ধনিদের বিদ্যায় কি কাজ ?। विनाशीन श्राटन छोता. दक्त शांत्र लोख १ ॥ अञ्चल क्षा द्यान्, कति विरवहना । धटमह कहिन मह, यम आहाशना ॥ धराति किन्तरत १०, एवं जन मखान । দে আনায় অবশ্য, ক্তিৰে বছ জান। ভোমার কুহতে তার, ভুলিবে না খন। ভোমাণ বলিবে ছোট, যথম তথৰী। अर्जा निध्य ! भरत हेस्टर, रमथ त्नी कारोर । একেবারে অভিনাতে, কর পরিহার। অনুভবে বুকা গেছে, নও জ্ঞানবভী। নতবা ঘটিবে কেন, ভোমার এ মতি । ॥ ভান না কি আমি লো, কেন্দ নিদি চই। সার জান কই তব, সার জ্ঞান কই ?॥ মহীতলে গত দেখ, উত্তম বিষয়। अधिक मी इह आहा, ऋषिक ना इह ह ভাল অতি অলপ ভাগা, মন্দ্র মুদর। क्षिति कड ग्रक्टलडे, **बहे कथा** कर ॥ बारमार्क ट्रियांत एक, मिथा किছू नग्न। নিয়ত তোমার ভারা, কেনা হোরে রয় ।

## (वाद्यम्पन

मम अपूत्रका ज्ञाक , अधि जन्म (तांक। जन्म (तांदक श्रिट्स श्रीटक, ज्ञारमत ज्ञारतांक। उत्त तक ज्ञाक रवांता, ज्ञाम कि ता नज्ञ। अक्यों कि श्रीरम रमके, ज्ञास रम्य मज्ञा

ভগিনি ৷ আৰি তোমার শহিত বিবা कतिए इंच्हा कति ना। जुनि क्लाप छति ध এক বার কত কটু কথা ব্যবহার করিতে। ट्यांगात कथा श्वितिया हास्य ना कतिया क्या হইতে পারি না। সাপনাকে বছ সপ্রমা করিবার নিমিন্ত যত অলীক তর্ক বিজর্ক করি তেছ, ভোমার গ্রতি ততই স্বশ্রদ্ধা জনাই তেছে, তুমি প্রথমেট বলিয়াড় যে মনুষ্যে তোমার অন্তঞ্লাভ ইচ্ছা করিয়া বিদা , लात्म मजुनील हुवेशा शात्क, जनः निणाला করিলে যদি তোমার কুপাপাত হইবার সম্ভ तमा ना थाकिङ, उदंद (कर्हे निमासूनीवन र রিভ না ৷ তোমার একথা যে নিভাতই ব গ্রাহ্ম ভাহার কোন সংশ্যা নাইন चाताधना कतिरल यहि छामारक शांध •বার তবে আর তোমার স্থারাধনা করিব

\*\*

श्राक्रम मारे। विमा व्यावासमाम (कड्डे व्यामात व्यव्हार लाच कतिएं शाद्र मा, कहे निमिष्ठ व्यामि व्याताशा हहेग्राहि, सुन्ताश जामात व्यापका टाई। इहेग्राहि।

पूथ नामितिता क्यां कर त्यां बतात ।
विकृति पारण नाम, त्रित ना जात ॥
वस्तर वर्ष त्यारण, मान ताथि वर ।
वस्तित कथांक तह, अभियोग उठ ॥
वस्त्र वित वह त्यारक, त्यां भीतक वार ।
कांत्र तक क्यांत वस्त्र, त्यां भीतक वार ।
कांत्र तक क्यांत वस्त्र, वस्त्र वित करात ।
क्यां जान हिंदी क्यां क्यां करात ।
क्यां कथम जाता, वस्त्र वर्ण करात ।

#### সরস্বতী।

দে কপা কাজের নয়, জতানে হা বলে।
জগতে যে সব লোক, কগিছে বসতি।
ভার মধ্যে অনেকেই, জানহীন সভি।
জালে ভোনার বড়, বলে বহা ভাষা।
ভারানে বিখাস করে, অজানের কণা

কাৰে কাৰে বহু লোকে, তব অসুগাড় ভোমাকেই বড তারা, বলে ক্রমাগত ঃ कामी शांद्र वक रतन, वक रह राहे। क्वानित निकटि कारता, अनुर्याध स्मे । বাঞ্চ আভদ্তর তব, করি বিলোক্ষ। यमाशांत्र कृत्व योष, अळांत्वत वन । মনে ভাবে স্থাধ রবে, ভবাশ্রর পেলে। ट्यांबात कार्कमां कटत. जन निवां टकटल ह দয়া ধর্ম সভাতার, করি পরিহার। নিয়তই প্তা করে, চরণ তেগ্রার ॥ कु जित्मत जात जाता, धहाद जिन्हा । একেবারে বাসা করে. अधर श्रंत घटत ३° ক্ষাগ্ৰ হইলেও, আশায় বঞ্জিত। खर् डाव फारमां नथ, मा दय विख्यि**ः**। व्यक्तांन शहात ज्वा. तारे त द्वारा । অনারাতে বুনো লন, যত বুদগণ ॥ खंड वर्ष हां इ दिन्न, वड़ नहा दिन । विकारित जात (कन, कहिए उह भान । (यांज त्थर्य करत स्वतं, भनीह शहरा। क्मरन तम लामित्न, इत्थत को योतनं ? म कामा कि कथन जारम, बामांत कि दम ?। आरमण कि करलामा, जारन कि असम ?। व्यथानिक द्वा कात्र, मनावे कर्थ। क्रमरन वानित्व काहे, वानित्का सूथ ।

र्योवरम कि ভारवानग्र, वांतरक कि जारन १। कांना कि जानिएक शाद्य, कि जानम शास्त्र न অন্ধ কি বলিতে পারে, পোডা কারে কয়?। চিরবোগি লোকের কি, স্বাস্থ্য-সূপ রয় ১ র उक्रत कि जान मार्ग, हिल्मात जाता?। कारक कि शिरकड़ इब, कड़ लाश जीता व অসাধ কি ভালবাসে, সাধর বচন ?। অহমারী জানিবে কি, নমতা কি ধন ? # অপ্রেমিক জানিবে কি, প্রণ্ড কেনন গ मदल हत्। श्रुत, थम कि क्यंम ? ॥ मीठ कि कथन जारन, मानिद कि मान ? : জ্ঞান বি খানে কভু, গুনির কি জ্ঞান १। অভএব মম গুণ, তুমি कि জংনিচে 🕮 বড় হও এ কথাটি, মুখে না আনিবে॥ নিভান্ত অসার বোন, ভোমার গেবিব। खानिगर्भ जुल्ह करत, छोमात विवर। তোমা হোতে হয় শিব, জীবের যেমন। ভোমা হোতে হয় পুনঃ, অশিব তেমন। তুমি সবাকার কর, যত অকলাল ! ত কি কর লো বোন মন্ত্রল বিধান গা আমি কথনই কারো, করি না অহিত। (करन माधन कहि, मवाकांत्र हिछ । बात किंदू विनवात, मारे आलावम। এতেই य वड़ हाड़ि, शिला निक्रभन ।

### (वादमम्बन् ।

रमन इरवह मात, कीत हाना नमी। (समम कृशित मात्र, मखदकत मिश ॥ यमन उक्त मात्र, स्मध्त कन। (यमन महमी-मांड, युविमन जल ॥ ষেমন পদ্মের সার, মধুই কেবল গ যেমন ভোজন-সার, কলেবরে বল ৪ যেমন চরণ-দার, সপথে গমন। रम्बन खारम-मात, मुकश खारन । (यमन नवन-मात, डीर्थ नवनम। रम्भन नामात मात, सूताम अहर । रयमन हमना-मांद, मधुँह कहम। যেমন ভাতুর দার, কেবল কিরণ ॥ বেমন শশির সার, সুধা বিভরণ। यमन प्रदेश मोह, शांती विविध्न ॥ মেমন অন্ত্রের সার, তীক্ষতর ধার। यमम बरलंद महि. भंद-डेशकात ॥ मिमन सूर्व-मात, (करज सूर्व। বেমন ভাষার সার, সমুদয় বর্ণ ॥ বেমন ইকুর সার, চিনি আর খাঁড়। যেমন দেহের সার, রক্ত আর হাড। সেইরপ আমি বোল, ধরণীর সার। विकल जीवम जांत, आमि महे शांत ॥ व्यामि यठ कति, मास्त्र ! छव डेशकात । তত কিছু তুমি নোন, কর মা জামার। যদিও আমার কাছে, জাদা ক্রটেন। যদিও অনেকে নয়, আমাব অধীন । তথাপি আমার যদা, গায়ে সর্বজন। তথাপি আমার বশা, তব ভক্তগণ। ।

### नकी।

वात वात विकि टाएल, यक मौन ताथि: बार बांत जब कथं, या भारत थाकि। ভড়ই মে বাঁড়াবাড়ী, করিভেছ কেন ?। कि कांद्रर्भ (प्रयादिय, केंद्रिएक (श्रम ?॥ मूथ प्रशासिक द्विन, शेथिएन मा आहे। অমুমান করি হেরি, তব ব্যবহার॥ इक्रियटी कामवजी, रह रहन राजनांत्र ?। ए निशं उनेशंह कशे, जन खोल योह রাগালে আমার তুমি, রাগালে আমার। বিশাস না কর ভূমি, সোকের ক্যায়॥ व्यागीतक विलिश टिफ. ब्रांट्स बीहा मान। ভোনার বিদারে বুলি, তারাই অজ্ঞান # मिटल जुनि स्थामरजी, अखान मराहै। **अहे कि क्षारमह कथी, क्षारा मुशारे !** আমা হোতে জগতের, কি কি অপকার। त्रजा कति का पार्वि, श्रीम अक्वीत ।

# (वार्यमृगरा।

## সরস্ভী।

कप्तरकातिनी मग्न, य कूलका रिनी : शक्तम-अनुगर्छ, मूर्शर-गामिनी ॥ ভোমার সহিত করি, তাহার ভলন'। लक्की लक्की नरल डांट्ड, गकट ललमां ह কলহ করিয়া তুমি, ভারিতেছ গলা। नां बारन ट्रांनीटन मक्ती. कई बांच नेना म তৰ গুণ কেছ্ বৃতিন, তাৰ্গতি নয়। सुनीला नांतीरक लाहे, खिल्ली जांता कर व ভাষারা আদিত থাক স্বভাগ ভোষার ! सभीनारक लक्की छट्ट, रुनिङ कि पाद १ তোমা হোতে হয় হত, অনিষ্ট ঘটন। একে একে সমুগয়, বলিব এখন # আমারি তো বিদান, আমি বিদানত ঈশ্বরী ! खामाति एवं थम, लिका! वृष्टि धरमधरी ब সংসার ভিতরে জাতে, বিদল হার ধন। **बहे ह**ै त्नांता नांना क्या छेणायम ॥ विना गनि राष्ट्र हम, कांचि तप जारे। ধন বড ছোলে ভাবে, ত্রমি বভ ছবে 🛭 विमार्गत था किएल दर्गात, एम दर्गत कार्यात । 'ধনের যে দেখি আঁতে, সে দেখি ভৌনার 🕯 विमानि प्रिंदिन क्यो, त्रह माहि कहा। **अउध्य मग देशाय, मार्डे को निम्छय ।** 

ধনের জাগা দোব, করিব প্রমাণ।
জানাইব ধন হোতে, যত অকল্যাণ ॥
জাতএব লক্ষিয় আর, করো না বড়াই।
শুনিলে পলাতে আর, পথ পাবে নাই॥

বড় নিদি বল বল, বিলম্থে কি আছে কল,
বল শুনি মনের কি দ্বোষ ?।
আনি অভি ছুউনভী, আপনি ডাঙনী অভি,
জান না কি, কারে বলে বোষ ।
ডোমার যে রাগ হয়, সে রাগ কি রাগ ময়,
এ বে বড় আন্চর্যা ব্যাপার।
বাগিয়া বলিলে বড়, সহিলাম ক্রমাণত,
ভারো কড বলিবে আবার ।

मत्रश्व छोत छे कि।

क्रिम्म वित्र तोम्, छान छव धम।

क्रिं अभिष्ठे मोहि घटडे, धटमत कांत्रव १ ॥
तांबांव तांबांत तव, हम तम्या तम्य।
भडण्यात त्वत्व, मंबांच मना त्वर्य ॥
मटम मटम तमांमटन, त्वांबेछ्टत हटन।
तरक्षत्र अष्टिमी वटह, ममदत खुटन ॥

### (बाद्यम्मम् ।

মারামারি কাটাকাটি, অবিরাম হয়।
একেবারে হত হয়, কত হাতী হয় ।
একেবারে অনেকের, পরাণ বিনাশ।
অনেকের উপস্থিত, হয় সর্কনাশ।
যথা তথা শুনা যায়, সুধু হাহাকার।
যত অনুষ্ঠের মূল, অর্থই তোমার ।

ছুপতি না পোঁতে প্রার, প্রজার মক্ষল।
করেকরে কর লয়, করি নান। ছল ॥
ছুংপের সাগরে ভাবেন, প্রজা সমুদর।
তথাপি রাজার কিছু, দয়া নাছি হয় ॥
মক্ক্ না প্রজাসর, কাতি কিবা তায়।
ধন মাত্র একে হয়, ধনের শালায় ॥
একটুকু কুখ কারো, মানসে না হয়।
কখন কি হয় বলি, সনাই সভয় ॥
ধরায় এমন রাজা, কত দেখা যায়।
রাজার নোভের তরে, প্রজা কেশ পায় ॥
রক্ষক ভক্ষক হোলে, কোথায় মিস্তার।
মক্ত, অনপ্রের মূল, অর্থই চ্যোয়ার ॥

দশারা ভাকাতি করে, সাসিয়া ভবলে।
স্বকার্য সাগিতে তারা, বগে কত জনে ।
হায় হায় দেখ বোল্, গ্নলাভ তরে।
নহের না থাকে দয়া, নহের উপরে ।

धटनत करिन स्थु, किरते हुनि करित।

व्यवस्था भर्ता भीरक, ध्रावरम क्रियंत्र॥

भिष्किता भीरते भरक, ज्यारकेतीत्र करतः।

वग्रवटि छती लिएए, ज्यारकेतीत्र करतः।

वग्रवटि छती लिएए, ज्यारकेती भरव ॥

क्छ लिएक मस्तात्रकि, करत जरेत्रभ।

मिन निशा जिर्मान, ध्रावरम हूप्भ हूर्ण॥

क्रियोक्टिएर क्रियोक्ट्रित, करत ला ज्याति।

सक्र जनर्थित गृम, ज्येष्टे लोगातः॥

কত কুলবতী তাজি, আপনার পতি।
ধন-প্রতাশির করে, কুপথেতে গতি ।
আনারানে কালী দেয়, অকসত্ব কুলে।
আমির বতন হত, একেবারে ভূলে।
আমির বতন হত, একেবারে ভূলে।
আমির বতন হত কেহ, জপ্তাল গটায়।
আমিরতি মজে আরু, অপরে মজায়।
আমিরাছে, জানিতেতে, জানিবেও আর ।
আমিরাছে, জানিতেত্ব, স্কর্মির পারর ।
আমিরাজি বল্পের জরু, প্রমার পার ।
আমিরাজি কর্মের ন্রাক্, অর্থাই তোগার ।
আত অমর্থের মৃল, অর্থাই তোগার ।

মিথ্যাসাক্ষী হয় কেছ, করি নারা ছল। অনেকের ঘটে ভার, কত অযুদ্ধন।

## (वार्यम् परा।

কোন বিচারক করে, জন্যানকে নার।

যা ইচ্ছা করিতে পারে, খুল যদি পাল ।

অনেক উকীল আতে, তার কড় দাদা।

কাল করে শাদাকে, কালকে করে শাদা।

অনেকে দাসত্ব করে, ধনের আশার।

মহাপ্রভু হযে প্রভু, তাদিগে জ্বলাম।

পরাধীন হোলেতার, গাকে কই মান ?।

বহু ঠাই, কত পাই, তারার প্রমান ।

সদা গালাগালি লাহ, আর তিরক্ষান।

তত অনুর্থের মূল, তার্থই কোনার।

বন্ধুতে বন্ধুতে আর, পৃতিক দা প্রাণয় ।
বন্ধুতার পরিহরি, জরি প্রায় হয় ।
সংহালরে সংহালকে, হল মলান্তর ।
অন্তরে অন্তরে হয়, প্রেচের অন্তর ।
একেবারে জিড়ে হায়, একতার পশি।
লোকে করে পরিহাল, ঘটে সর্কাশি ॥
লোকালয়ে লোকে করে, বাল বিসম্বাদ ।
করে অন্তিরে কুপ, পরস্পরে খাদ ॥
সংসারকে বোলহয়, অন্তরের মন্ত্র।
কেবল ধনের ভরে, অন্ত্রি হন্ন প্র ॥
জার্থের যে লোক দাই, কিসে বলি আরে।
যত অন্তর্গর মূল, অর্থী ভোমারি ॥

অর্থের কারণ আহা, পর-অকলাণ।
অনেকে প্রার্থনা করে, হয় সপ্রমাণ॥
অনেকের রোগ হোক, বৈদ্যের প্রার্থনা।
অনেকে মকক, গন্ধাপুল্রের কামনা॥
অনেকে মকক বন্দ্র, উকিলের মন।
মদ খায় অনেকে, শুঁড়ির আকিঞ্জন॥
চাসালের অভিলায, ব'ড়ে শুসা দর।
ঘরামির বাসনা, পুড়ুক বহু ঘর॥
অনেকে লম্পাট হোক, বেশ্যাব বাসনা।
অরাজক রাজ্য হোক, দ্বার্গ কামনা॥
রাজপথে ধূলা হোক, প্রার্থনা গোপার।
যত অনর্থের মৃল, অর্থই ভোমার॥

পুর্বে ভারাভার হয়, ধন আগমনে।
পুর্বের অবস্থা আর, নাহি থাকে মনে ॥
বাহার সহিত ছিল, অটল প্রনার নয় ॥
বার সঙ্গে, মনোরদে, থেলেছিল কত।
একত্রে যে বন্ধুসহ, বহু বর্ষ গাত ॥
অনেকে এমন মিত্রে, পেয়ে কিছু ধন।
হার হায়, একেবারে, হর বিশারণ ॥
ধনমনে এথকার, মত্ত হোরে রয়।
চেনে লা বলিয়া ছলে, চার পরিচয় ॥

### (बारथन्त्रमञ् ।

मिट्ड मिंड चूटल यात्र, डेकि व्यथकात्र। यक व्यनर्थित गूल, व्यर्थहे ट्रांशांत ।

सत्म मानस्वत मर्न, जस्म णश्कात ।
तिथिति (निथिति धर्मी, शर्त मृजाकात ॥
व्यवकात-जनकार, हर्द्र दिवि देव ।
तुक कृत्रविशे शास्त्र, मकल ममत्र ॥
व्यवकात जीरन मा स्म, ह्यां कर मन ।
वक्कात जीरन मा स्म, ह्यां कर वर्ष मा स्म ।
वक्कात जीरन मा स्म, ह्यां कर व्यवकात मा स्म ।
वक्कात जीरन मा स्म, ह्यां कर व्यवकात ॥
विक श्रम स्म क्ष्रिं हिस्सी, दुक्ति स्म हे ॥
विक श्रम स्म श्री । जीत जल्ला ॥
वम द्यां कर प्रश्न ।
वस व्यां कर व्यक्त ।
वस व्यां कर व्यक्त ।
वस व्यां कर व्यक्त ।
वस वस्ति मृज, जर्थाई द्यांगां ह ॥

ধনবলে ধনী করে, কত অত্যাহার।
ধরাধানে দে সকল, অগোচর কার १॥
দাধুরা কুজনে হেরি, সভর ধেনন।
ধনহীন ভর করে, ধনিকে জেনন ॥
অনেকে অলস হয়, ধন-পেলে পরে।
নজতাকে একেবারে, বিস্কুনি করে॥
রিপুনল করে বল, ভারের উপরে।
শর্মান্তর ভয়ে আহা, নির্ভিণ্ড সরে॥

# (बार्थमून इ।

भीव बूर्क, शृक्ति खाँब, अन्तर्भन स्त्र। विट्यक मा क्य क्यां, पूर्ण कारत तह है धरकवारत ममुनम, खर्णत मश्हात। यक अमर्थित मृत्र, खर्णहे द्वामात है

कारनक शनित कार्य, वर्ष त्यंत्र माहे।
कारने कि स्टर-शेटर, कार्य कार्य कि
केव कि स्टर-शेटर, कार्य कार्य कार्य केव केव कि सार सार, मानि दि कारन।
श्री कार शोदन कार, पूर्ण मादि कारन।
कि ना अपन स्थ, केव्य मादि कारन।
कारने ना अपन स्थ, केव्य मादिन ॥
माना-लोट्य क्वा द्यार, काल करड कक ॥
सामा-लोट्य क्वा द्यार, काल करड कक ॥
सामा-लोट्य क्वा द्यार, काल करड कक ॥
सामा-लोट्य क्वा द्यार, काल करड कक ॥
कार स्था श्री कार्य कार्य कार्य ॥
कार कि निकार कार्य, क्वा कार्य कार्य।
कार कि निकार कार्य, क्वा कार्य कार्य।
कार कि निकार कार्य है कार्य कार्य ॥
कार कि निकार कार्य, क्वा कार्य कार्य ॥

मानूष मानून कारन, क ता रड़ तथन।
श्रीत मानून कारन, कारन ना थाउन है
श्रीत कारत कान, स्वक्रभ वार्चात।
छेठिए कि, महर्थाट, कहा तम श्रीत है
महार्ज कार्याह महर्जी कार्याह महर्

### (वर्दभक्षश ।

करने वक्क रहारित लोक, क्षिमिन्स्त बांत । निज्ञ नत्तन-मीरत, मरना क्रः एवं नांत ॥ शिववांत हांहोकांत, अभिवांत करत । खजन-वित्रह-कुरत, वह निम खुरत ॥ छावना-मांगरत आंत, मोहि शांत शांत ॥ यठ जनरर्थहे मृल, अर्थहे रहांबांत ॥

কেং কেং বাণ ফুড়ে, আপনার হাতে।
সর ইচ্ছার সহু করে, যত কট তাতে ॥
আপনার পিঠ ফুড়ে, কেং দোলে পাশে।
চড়কের গাছেতে, চড়ুকে হাসি হাসে ॥
হার হায ধনলোভে, এত মন মঞে।
কেং পোষ্যপুত্র দেয়, আপন আত্মজে ॥
মারা কটিছিরা বেবা, তাত্রে নিজ সুত।
ধরার কি নয় সেই, জনক অন্তুত ॥
কেমনে অন্যথা করে, স্ফান-নিয়্ম ৽।
সে পিতা তো পিতা নয়, তনয়ের য়ম ॥
কত হ্রংথ সে সুতের, জ্ঞানোনয় হার!
যত জনর্থের যুল, অর্থই তোমার ॥

कूल मांजा (एवं कांस कूलीन तांच।। कांस् कूटल जब जात, मांचे निकलेश ! मंज कूलकांमिनीकि, श्रीतंशत कटत । मांचे जात्व जात्वत कि, मांगा स्टब श्रीत !

বিবাহ ছো নয় বেশ্ল, কুড়া, না করি বিচার।
পিজা কোনে বিয়া দেয়, স্বীয় তনুজার।
ধনলোভে করে সেই, বিপরীক্ত কাজ।
চিরদিন তরে হানে, স্তা-শিরে বাজ।
হায় হায়, খনাথায়, ফেলে নেয় জলে।
তেমন বিবাহে কি লো, গুড় ফুল ফলে।
ডাতে কি উত্তরে হয়, মনের প্রথম ?।
ডাতে কি লো কুলজার, কুল আর রয় ?।
বিবাহ ছো নয় বেশ্ল, পিছু লির জাক।
হুংখের অনলে মন, পুড়ে হয় খাক।
অবশেষে হা হয় ডা, ত্রোচর কার।
বভ অনথের ফুল, ক্রম্মই ডোমার।

मार्शित महत्त्व भटकः मार्गित भयम। मार्श्व कार्याहरूद्धः मार्ग्व मानवन् ॥ সাপ ছুঁ ড়াছুঁড়ি করে, ধনের আশার।
এর গার, ওর ঘার, সাপেরা দংশার।
দৈবে যদি বিষ থাকে, চলে পড়ে মাল।
সো মালের পজে হয়, সেই সাপ কাল॥
মাপ নোহের থেকা করা, কড়ু শম সোজা।
চেপে পড়েড় ওগন, রোজার গাড়ে বেংকা র বাহিবার ডারে জার, থাকে মা ভাষোর।
দেখিতে দেখিতে হয়, পরার বিয়োগ॥
বনের বারণ মাত্র, প্রাণ যায় ডার।
যত অন্থের মূল, অর্থই ডোমার॥

কাট কাটি বৈত্বে লোক, ধন্দর আশার।
কালনে বালের মুখে, জনায়াসে যাল।
ধন পাব আশা করি, ছাতে প্রাণ করি।
তুফানেও নাবিকেরা, বেয়ে যার তরি।
সেনারা রণের বেশে, রণক্ষেত্রে ধায়।
ডুরুরিরা নাগরের, তলায় তলার ॥
বাজীকর গুরে গিষা, বাশের উপর।
কেহ উঠে গগণে, কান্দের প্রাণনাশ।
ধন-আশা আছে ভাই, নাই কারো ত্রাস ॥
ধনতরে করে লোক, বিপদ্ স্থীকার।
যত জনর্থের মূল, জ্বাই ভোমার॥

खितिनंत, खंडांनिंत, खंडांति, वंडांति, वंडां स्वांत्र अस्त रहा, अर्थित कांत्र । स्व क्ष्यं मन्त्र जिल्ला, जनरू अन्तर्भात । स्त कि कूर्क आर्ट्स, दला नारि यात्र । लाहे लांक " सम सम " कित्रा दिखात । लाहे लांक " सम सम " कित्रा दिखात । लाहे लांक " सम सम " कित्रा दिखात । लाहे लांक " सम सम " कित्रा दिखात । लाहे लांक " सम सम " कित्रा दिखात । लाहे लांक " सम सम " कित्रा दिखात । लाहे लांक " सम सम " कित्रा दिखात । लाहे लांक " सम सम " कित्र वांत्र । लाहे लांक सहस्त क्ष्यं करता कांत्र । लाहे वांक सहस्त कांत्र कांत्र कांत्र । स्व कांत्र कांट्स माज, कर्य वांत्र वांत्र ?। स्व कांत्र कांत्र स्ल, कर्य हिंदी स्वांत्र ॥ "

मवात मृत्यंत हेन्छा, जात्छ महम महम।
मवादे वार्क्सिन होन्, मूश-अत्वर्धा ॥
किहम मृथी हत्न, छोत, म! कहत छेला ॥
धन छेलार्क्सन कहत, मृत्यंत आमात ॥
धनलां छ हात्म करें, मृत्यंत आमात ॥
धनलां छ हात्म करें, मृत्यंत अधात ।
साह धता नाहि हत, काला मार्था मात ॥
धन छेलार्क्सिम वान्, युछ हृश्य हत ।
धनकहत छन्यिक, दृश्यंत छेन् ॥
धन थाकित्वहे कह्य, ह्याह अख्या ।
साह दत्म कुछ हुःथ, मक्क म्यस ॥

## (बार्यम्बर्भ र

অতএর ধন শুধু, বুঃধের আশির। যত অনুর্যের মূল, অর্থই তোমার।

क्र तर्पाट एक तक, यमवाम् इतः।
दोन दिन्द समर्थान, उक कर्नु नमः ॥
सन्त कर्षा एक आहि, यक्ष कार थनः।
अन्तर्वा १ रू मतः, अनोतम मान्तरः।
कृष्णी की. देक मनः, योगि कार्यः वाद कार्यः
पनि अने मस्नां, ना शोदक कार्यः कार्यः।
पनि अने मस्नां, ना शोदक कार्यः कार्यः।
पनि अने मस्नां, ना शोदक कार्यः वाद्यः।
सामितिक किलाय, सीनतम निमायः॥
अकार्यः मान्तर्वाः, कार्यः दिन्दनः।
क्र क्रायः म्लावाः, कार्यः दिन्दनः।
क्र क्रायः मूल्, अर्थः दिन्दनः।
क्र क्रायः मृल, अर्थः दिन्दनः।

#### राक्ती।

क्रवात घटन कति, हुंश कादि तहे। क्रव कथा क्षत्म हुश, कर्ता यात कहें। एसथाएन नटनत द्याय, होजात होताह। धटनत क्षरांत कथा, क्रिटल न। कांत्र। বুদ্ধিতী হোরে তমি, এক চোকী হোলে। বড হোতে চাও শুধ, দোৰ সৰ হোতে। विरुक्तना कत निनि, शतिकति द्वाव। माञ्चरवद्र लाघ मह, ध्रामत कि लाघ ? । अमि नियां यनि कह, नदक्कां कार । ভাষাতে অসির দোষ, কে কোথার ধরে ? # मिक-महकारत (कड़े, करितल अहात । ভালতে ঘটির দোব, কে করে প্রচার ? গ खरलं कि मांच बारह, जुर त्यारम जरम १। अमरलंद मिर्च किना, श्रिल अमरल? विस (शहस (कह विने, प्त धीन महहोहत। বিষেত্র কি অপারাধ, তোমার বিচারে ? ॥ বিনামার দোব কিবা, ফোস্টা হোলে পায় १। বাণিজ্যে কি দেখি, যদি ক্ষতি হয় ভাষ ? ॥ मिडि कि मिथ गरल, मेडी मिशे शिलि १। যোডার কি অপরাহ, পোডে খোঁডা হোলে? भारक छेरठे श्लीटङ स्मारल, क्षेष्टर कि भारक श অপর্যা কথা নিদি, শুনি তব কাছে॥ धत्नीत मयूनांह, मना मार्थ हिछ। বাৰহারে ঘটে মাত্র, যত হিভাহিত। बावशांत-छर्ग रह, शहांत कलान। बारशंत (मार्य जत्म, जांद्र क्लानं । যাতে প্রাণ বার পুনঃ, তাতে প্রাণ রয়। ল্লব্য-দোষ গুণ ধরা, অসুচিত হয়।

### (वादयन्त्रमञ्जा

श्रामद्र त्ला कार मारे, काथ यामहत्त्र। चार्थमात सार्व घटने, मानत्वत रक्षत । श्राकारा मा जाटन निनिः भट्नत वाजात। ধন তাহাদের করে. শুধু অপকার॥ অনেকের ধন আছে, দেখা গার বটে। সে ধনে ভালের কভ. শুভ নাহি ঘটে ৷ त्म धम ভारतत रहा, कुःरुश्त करित्। দে ধনেই হয়, নানা অনিটে ঘটন॥ তা বলে কি ধনে ত্রি, ছবিবে সলাই ।। তোমার কি একটুকু বিবেচনা মাই 🖫 त्य मानद धनदलानी, क्रूके धनशांख । ডাব্রে দোষ দিতে ত্রি, পার সরস্থতি। অগতে সকল লোক, না হয় সনান। মানৰ বিশেষে হলে, যান, অপ্যান ; অসতের হাতে ধন, হইকে পতিত। ভাতেই কেবল হয়, ধরার অহিত। যথন সতের করে. মম ধন হায। জগতের উপকার, কত হয ভায়॥ **टम धन क्रुट्यंड सह, यूट्यंड क्**रिन्। দীদের দীনতা হয়, সে গুমে হরণ 🎚 সে ধন তো এক সাঁহি, থাকে না সঞ্জিত। অনাথ অনাথা নয়, সে ধনে বহিংড 1 म धरमण्ड बनार्थंत, त्राभ मिरांदन भीमशीन मकरलंब, छेपन शालन ॥

वमनिविश्तिगर्दाः वस्त विकतनः।
कांगा (थीं कृं कृं दलारमतः, अकांव स्थाप्त ॥
विववात सार्व कांत्र, नांहि थारत कल।
गृहशीन, गृह भाग, कलहीन, कृल॥
अकाव बरन सार्व क्रम साउ क्रांता।
धरन कि इत्र मा स्वान, कारता क्रेंशकांत १॥

### मद श्रुकी।

मानरतत (मांच वर्ष, मिथा किंदू नह।
योक: व किंद्र व हैं।, कांद्र कांद्र कांद्र केंद्र केंद्र केंद्र कांद्र केंद्र क

## (वाद्यन्नमः ।

কখন কখন, দেখি, এমন আবার। मर का कामर इद्र धन (इंति छोद्र ! থানের ক্ষমতা আছে, মন্দ ক্রিবার। দ্রাল করিবার শক্তি, তত নাই ভার। लामद পाइलि धन, माहि इस मद। বৰণ সে হয় জাবো, অধিয় অসৎ # অভ্যব গুন ছোতে, শুভাশুভ হয়। कामाद्र य विमा विक, तम अले की केर यमराजन विका (शास्त्र, क्य गांसभीन। श्रुक्रें जात कांत (el, शार्क में अक दिल ! मन्य दुष्टि श्रीय छोत, अरकशास्त लगः अमिन समील (पन. अपर (त नश्र मध यनि विमात्रमा, करत केशा पर्धमा আংরো সং ভয় সেই, নথন ভগম # অভএৰ বিদ্যা হোতে, সতা কলে শিব। कार्रा (सं करत में घार, कथन किन्छ। ষ্ঠার্থ যে বিলা ভার, কোন দেখি দেই। त्य निमां अभिक्षे करत, निमां मय त्यहे ॥ " विना विना " कत लाक, मथा उपाय : प्टार्डिट द्यार्थ निकार, क क्रम भड़ाए ? ॥ পড়িলে চুপাত গুঁগি, বিদ্যা অংশ কই।। भारको विना मह, कोटन, दिला कि ता कहे ? I বহু দূর বিস্তারিত, আমার ভবন। কড বিদ্যা আছে তায়, মাই মিরপণ !

হিতাহিত ছুই হয়, গনেতে তোদার।
ক্রেল সাধন হিত, বিন্যাতে আদার।
আর বিবানেতে লন্মি, নাই প্রয়োক্ষ।
আপনা আপনি ভেবে, দেখনা এখন।
বিদ্যা কি গনের চেয়ে, বড় কি লো নয়।
তবে আমি বড় ভার; কি আছে সংশয় গ

#### लक्की।

ভোনার বিদ্যার গুণ, করিব প্রবণ । বিদ্যা সোতে হয় করু, শুরু সম্পাদিন ॥ শুনিয়া বিদ্যার গুণ, করিব বিচার। বড় তে ট বেগধ করে, হইকে আগিব ॥

#### সরস্থতী।

প্রতিধান কর লামিন, কর প্রতিধান।
প্রন শুন গোটাকত, বিনানি-গুল-গান ॥
বিপানে ক্রমুক্তি বিনান, সলা করে দান।
বিদানি সাধন করে, সমূহ কলাল ॥
অজ্ঞানের অজ্ঞানতা, বিদান করে নাক।
কিলা হোতে পূর্ব ক্রম, লানা অভিনাব ॥
স্কুলার ধরণীর, সন্দেশ জানার ॥
একেবারে করে নাক, মন্দ্র ব্যবহার।
রিদ্ধি করে বানবের, ক্রম্ভা অপার ॥

## (वाद्यन्म्स्य ।

मानत्मत कृष्टिसांक, पूरीकृष करत। गोन्मिक अञ्चकात. এक्काट स्ट्रा যত পারে ভাতের, নিয়ম বুলায়। विमारिङ्के जार्राहरू, माहम जवाह ॥ विना। क्टब बनवान विश्व प्रयम । **ভাবে পাবপূর্ণ করে, মানবের মন ॥** काम करत देवती आहे. विर तहना-महिन्। क्यानाः राष्ट्राह गर्ना, शरामान प कि । প্রিরদ হাব্য সদা, কহিতে শিপায়। রভ করে পিতা লার, নাভার মেনায় 🛊 मर्ग करत बानरमर, अयथ भवणात्र। জ্বাদীয় অমিত্য সৰ, সমিত্য সংস্থার হ পর্মেশ মার মাত্র, মকলি অনার ৪ बर भार जिम इक मर्स-भनामात । विमार्गवटम अथ ना उ. रह मान हैं है। विमात स्थान मिंह. (मंथर ह मा शाहे ह

### লক্ষী।

অসামান্য শক্তি ধরে, বিব্যাই ভোষার। বার বার আয়ায়, শুদালে কত বার ঃ তবু বড় হইবার, আহে অভিনায়। বল নিনি! কিশে হবে, এ এব বিনাশ গঃ

# मंत्रवही ।

নং নারে থাকিতে হোলে, চাই কিছু ধন।
এ কথা স্থীকার না, করিবে কোন্ জন ? ।
ভথাপি জানিবে বোন্, ধন নয় সার।
বুশ্গণ ধনে জানে, নিভান্ত অসার ।

### लक्षी

বিনা ধনে কিশে হয়, জীবন ধারও ?। অনাহারে থাকিলে নে, সংগয় জীবন । বিনা ধনে পাবে লোক, কেমনে আহার ?। ভবে ধন কেন হয়, নিভান্ত অসার ?।

#### সরস্ব জী।

ভরণপোষণ তরে, কাজ কি লো গনে ।
বাঁচিতে তো পাঁহে লোক, গেলে পরে বনে ।
বনের তকতে আছে, নানাবিধ কল।
নদীতে তো আছে রোন্, প্রিমল জল।
বসন তো হোতে পারে, পাদপের ছাল।
কিবা প্রয়োজন আরু, পারুবন্ত্র শাল।
কিবা প্রয়োজন আরু, পারুবন্ত্র শাল।
কিবা প্রয়োজন বোন্, ধরার বিভব ।
ভবনেকে তাপন হোরে, তাজিয়া সংসার।
বছনিদ বাঁচিয়াছে, করি ফলাছার।

#### **विदिश्यक्षेत्र** ।

मानदम क्लांटबट्ट शांक, निजा निरंधन। · कानराम (यांका धारम, कोरहर कामन ॥ सर्थर उ कारतर इ जाता, जीवन यार्थन। दक सभी मश्मारत व्यंदक, जीदनह यजन है। তারের ছিল দা কিছু, বিভব ধরার। मिरा भिभि कार्राहेल, शांह उला मात्र ॥ তর জারা শ্বথে ছিল, চিত্র নর দেই। নিশ্চয় জানিবে রোশু, ধনে স্বর্থ নেই॥ धान ऋथ नग निका ! एवं सेधू भटन । सूथी (भारक शास्त्र लांक, धारक्छ कानाम ह সদাগরা ধ্রাপতি, যদি কেউ হয়। किन्न जात गति यनि, जूथ नाहि तय ! ভবে দে হইতে মুখী, পারিবে কেম্মে १। दिकल घडन डाउ. स्थ-इएबयर्ग । व्यक्ति विमा भरम, सुथ क्रांटक शाहत । निमा धरम ज्वामी शांद्र, शांदिर कश्मार ह विमा फ्रास्न घटि स्थान, अनुश अशाह । आरम्हे जो मूथ जाम, म्भ किस यात ॥ वर्धन (य अवस्थात थाति, ज्वानि सन ! मिहे व्यवस्थात जुनी, दत्र मा उभन ॥ যখন দংগারে দেই, ভাবে লো অসার। ज्यम कि धम श्रींख, मांग्रा शांदन कांत ?। क्तरम दल कांन कटड. शहररमं-भारत मत्म क्यांत्र माहि खात्म, मान मर्गमादम ह

दित्रां भटतंत्र थन, दिश्मां नाहि करतं।
अख्यानतं में काहि, नम्स्करि मरतं ॥
भर्माद व्यानस्य सम्हे, भारक हित्रकांन ।
स्य खारन दिन श्रीरक हित्रकांन ।
स्य खारन दिन श्रीरक, काहि ना स्म खान ॥
श्रीरक भट्नकांस लान, इन्देर खानांत ॥
हेन्स्कांस भिन्नकांस, कहार खार्मिंग ।
कि छह खानां खात, मह्मान स्म खात ॥
दिनां-श्रीरक न्ह्र किन्छ, खारम हेन्सिं ।
दिनां वर्ष किनां वर्ष, छ। त स्र्वर्शक ।
स्रितां वर्ष स्थारन खरतं ॥
दिनां वर्ष स्थारन खरतं ॥
दिनां वर्ष स्थारन खरतं ।
स्रितां वर्ष स्थारन खरतं ।

#### लम्बी।

ভালকপে বুলিলাম, বচন ভোমার।

' তুমি বড়' করিলাম, এখন স্বীকার।
বাদেতে বড় তুমি, হোরেছ হথন।
আমিই তো ছোট বোশ, হোরেছি তথন।
না বুমিয়া করি ছন্দু, ইকি বিপরীত।
বিবাদ উচিত নয়, ভোমার সহিত।
ভোমা-হোতে হত মম, কলাল সাধন।
সে সকল ভালরপে, বুমেছি এখন।
বোলেছি অনেক মন্দু, অহনার-ভরে।
কোরেছি কতই রাগ, ভোমার উপরে।

## (वादभन्मृनः ।

(म मकल क्या निमि । कड़ निक कुर्ण। আমায় বাঁধিয়া পুনঃ, রাথ মেহওণে। আর এক কথা দিদি! জিজাসি ভোষায় ৰুঝাইয়া দিতে হবে, এখনি আমায় ॥ কোন লোক সৎ আর, অসং কে হয়। धन कि तम् ना मिनि, छोत भतिहरा ? ॥ ধন না থাকিলে লোকে, কে কেমন জন ক্ষেত্ৰ করিতে বল, পারে নির্পণ ? # चाजारवर उक्केंगिक, मानव अमन। ধন শাই বোলে ভার, শিষ্ট আচরণ গ মনে মনে কুকল্পনা, কড়ই ভাষার। বাহিরে ভাহার দোষ, না হয় প্রচণর॥ আবিতি সভাবে সং, জাতে কোল মর। পর্হিতে রত মদা, ভাগার অন্তর। ধন নাই বোলে শিক্ত, চুপ কোঁৱে এন : তাহার মনের কথা, প্রকাশ না হয়॥ कहिएक मा भारत मिहे, भर-देशक है। কেমনে পাইবে লোক, পরিচয় জার 🤈 🛭

সরস্বতী।

দয়মিয় পর্যেশ, সর্ধ্ব-দূলাধার। মানবের ইচ্ছা লোরে, করেন বিচার । যাহার যেমন ইচ্ছা, সেই রূপ সেই। তাঁর কাছে কারে! ইচ্ছা, অধিনিত নেই। लांदि यिन नोहि जांदन, लांक दक दक्षण । लांच कांत्र ऋषि छोट्ट, कि इव अपने ? ॥ कि कतिरल शेतकांटने, कट्यू मांज दिखे । अदेवल मक्टनर छोटांदै छेडिए ॥

এইৰূপে লক্ষ্মী এবং সরস্বতী উভয়েই বিবাদে কান্ত হইলেন: লক্ষ্মী সরস্বতীর নানাবিধ জ্ঞানগর্ভ উপদেশ-বাকা ভারণ ক-রিয়া মনে মনে অবেক তর্ক বিতর্ক করিবার পর আপনাকে আর শ্রেষ্ঠা বিবেচনা করিলেন ना वर्षे, किन्दु नाडिमश विमर्द छाव धातुन क-রিয়া ব্যিয়া র্হিলেন। ভাহাতে বুলিমতী সরস্তী সতী স্বায়া অনুজার ভাব বুঝিতে शांतिश महामा-तम्दन चरनक खरवाध-वाका বলিতে খারম্ভ করিলেন, 'ভগিনি। ভোমার বিরস বদন অবলোকন করিয়া আমার ক্রদয় বিদীর্ণ হইতেছে। হায় হায়! আমি তোমার নহিত কেন বচশা করিলাম ? জগতের মধ্যে তোমাকে কখনই সামান্যা ৰোধ হয় না। তো-মার দ্বারা লগতের যে কত উপকার হইয়া থাকে তাহা বলা বায় ন।। বদিও ভূমি কোন

i King

মতেই অমার নিকটে শ্রেষ্ঠা হইতে পার মা, তথাপি তোমার মতন মুখা। আর কেছই রাই। তুমি আমার প্রতি অনেক কট্ট ককা প্রয়োগ করিয়াছ, কিন্তু কনিষ্ঠ। ভগিনী বলিয়া সানেক সহিষ্ণুতাও করিয়াছি। আমিও যদি কিছু विका बाकि, छोड़ां भरम कविंछ मा, कांवन **टकार्छ।** जीनीत निकटें किनक्षत मान अश-মানের বিষয় কি আছে ? আমি ভোমাকে না **দেখিলে অত্যন্ত প**রিতাপিত। হ**ই**্লেজতএন সা-मात निरक्তरन शृक्ताशत समन आंश्रम क-রিতে সেইৰাণ এখনও করিবে। নতুবা আমার আর অনুভাপের দীম। থাকিবে ন। । ভূমি যদি কেবল অনিউকারিণী হ্টুতে, ভবে ভোগাকে গৃহস্থাশ্রমি ব্যক্তি মাত্রেই এতাদৃশ সমাদর কা রিত না। তুমি মান সম্ভ্রম প্রদান করিয়া থাক। ভোমার আশ্রয় গ্রহণ করিলে মনুষা অনেকা-**तिक विशुद्ध वै** এक श्रकात सूची वरेट भारत। ভগিনি! তোমাতে আমাতে যেন কথন বি-চ্ছেদ না হয়, ভাহ। হইলেই পর্ম ভাগ্য বলিয়া স্বীকার করি। তোমাতে আমা**তে** 

षांभिलन इडेल ध्वामश्रालव नमख लाएक-রই অপার অনিউ ঘটিবার সম্ভাবনা! আমি পূর্বের বলিয়াভি যে. লোকে কাননবাসী হইয়া ফল মূল আহার করিয়া বিনা ধনে জীবন বাপন করিতে পারে, কিন্তু যথন ধংগীর সমস্তই তো-মার অধিকারভুক্ত তথন তোমার আশ্রের বা-ভীত কেইই জীবন ধারণ করিতে পারে না। ভোষাতে আমাতে কিছুমাত প্ৰভেদ নাই। তোনার সাহায্য ব্যতীত আমার ক্ষমতা প্রকাশ পায় না এবং আনারও সহায়তা ব্য তীত তোমাকেও কমতা-রহিতা হইতে হয়। আমি এক্ষণে ভোমাকে বর প্রদান করিভেছি বে, পৃথিবীর আবালরন্ধবনিতা সকলেই তো-मारक, ममान श्रमान कदिता । य वांकि छा-মার প্রিয়পাক হইতে সংসারে দে ব্যক্তি ষেমন সম্ভ্রম লাভ করিবে তেমন আর কেহই পা-রিবে না। অতএব দংদারের মধ্যে তুমিই धना रहेश थाकित्वं"।

লক্ষী এবং সরস্বতীর এইরপ কথোপ-কথ্ম প্রবণ করিতেছি, এমন সময়ে স্বামার: নিজাতক হইল। অকসাৎ নিজাতক হওয়াতে আমার মনে যে কোত জন্মিল তাহা
নাক্ত করা বার না। আমার দম্দর সংশর
একেবারে দুরীভূত হটল। অজ্ঞানতা বণ্ডঃ
যে জমোদর হইরাছিল; তাহা আর রহিল
না। যে বিনয় চিন্তা করিতে করিতে নিভ্রাণত
হইরাছিলাম, সে বিষয়ের চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত অবগত হইলাম।

নিক্রাভঙ্গ হোলে পরে, করি হার হার :
কি স্থা ছিলান আমি, সুপের নিক্রায় ।
আরো কত শুনিবারে, ভিল অভিলাব।
আহা মরি! একেবারে, হলেন হতাশ।
আরো কত জান লাভ, করিবান তার।
বঞ্জিত হলেন আহা, দে সৰ আশার ।

मम्बार

# ্ শুদ্ধিপতা । সশ্ব

8,	C	<b>म्मारु।</b>	<b>न्ना</b> कांत
*	32	বিদ্যাধ্য -	विनाधन
*	. \$8	ৰ ক্	যাকু
79	>3	শ্ৰমুদতি	<u> অর্মতি</u>
₹8.	: 0	व्यक्षिमी	<b>प</b> रीमी
.45	. 28	<b>সভ্য</b> ভার	ন্ <u>ড্</u> যান্ত্যার
ও২	٩	व्यक्षम	9 4 T
39	1 5b	भीशिमस	नी <b>खि</b> राश
44	34	विश्वहिङ	रिश्र ही र
85	25	संह	বার
<b>#5</b>	24	मगूत्रग	সমুদায়
45	>9	বেম ন	যেম্ন যেম্ন
د ع	1. 30	জন্ম শুন	क्त्यार् <sub>य</sub> ८५ <i>न्</i> य

ज गार्

शंह

ছবিবে

93

d'

Œ

3

জনা হ

मृशिदव

· TIN